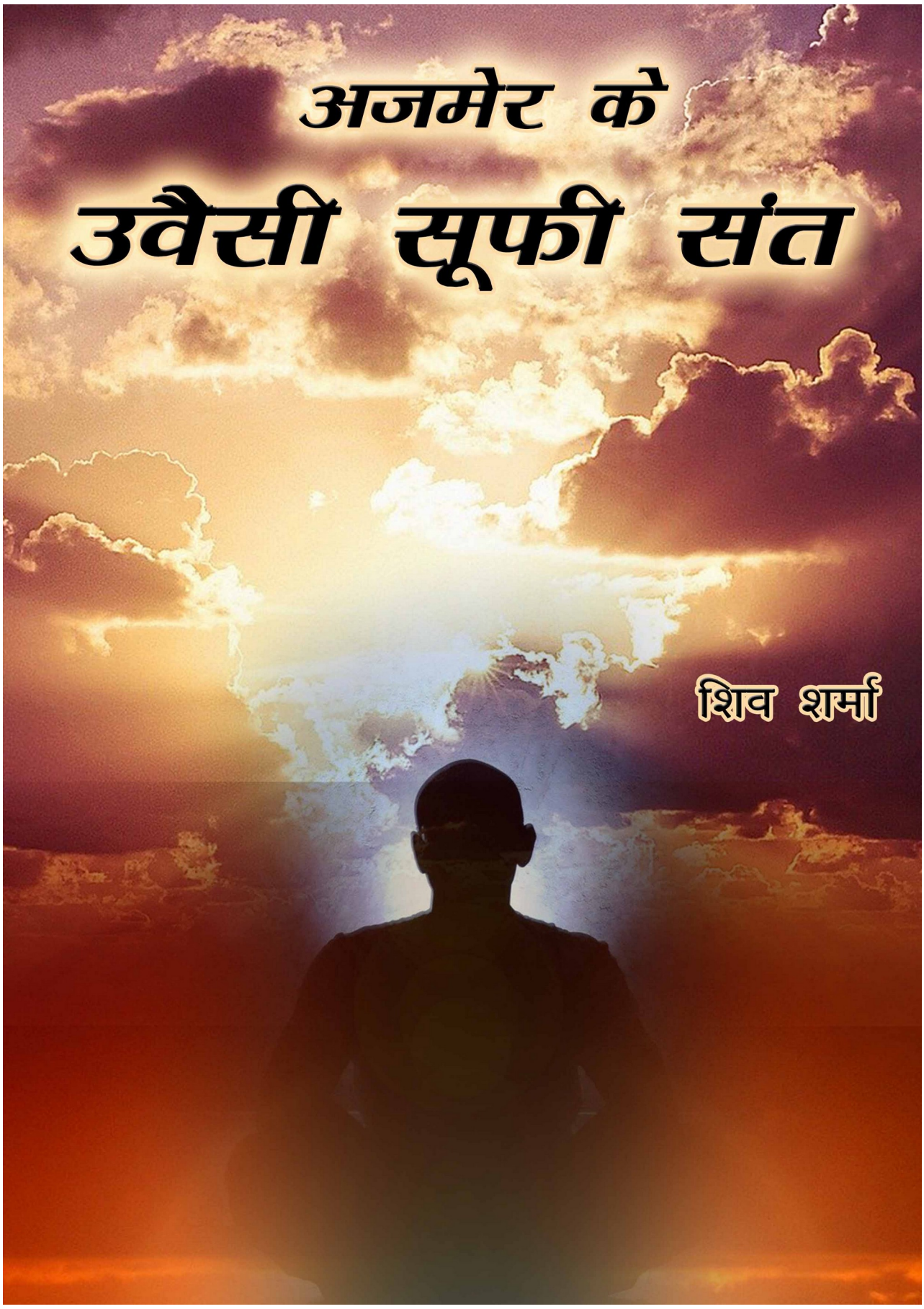
अजमेर के
उवैसी सूफी संत
शिव शर्मा

शीर्षक - अजमेर के उवैसी सूफी संत

लेखक - शिव शर्मा . 217, प्रगति नगर, कोटड़ा, अजमेर।
मो0 9252270562, 9588927938
www.geetaandadhyatm.com

प्रथम संस्करण - 2020

टाईप सेटिंग - शिव शर्मा

प्रकाशक - परा वाणी प्रकाशन, 217, प्रगति नगर, कोटड़ा, अजमेर।

Graphics, Digitization and PDF Compilation By :
Silver The Studio, Ajmer.
Mo – (+91) 9024032320
Website: - www.silverthestudio.com

अनुक्रम

01. लोगों पर ऐसा करम किया कि बन गए जन-जन के बाबा हुजूर.....04
02. सादगी, सुकून और चेतना बोध का साकाररूप है बाबा बादाम शाह की दरगाह..... 08
03. पीर हमारे दिल में है तो हर रोज गुरु पूर्णिमा.....12
04. नाथजी की टेकरी से ओम शब्द हुआ गुंजायमान.....15
05. रूहानियत और आत्मीयता की मूरत; सूफी संत हजरत रामदत्त मिश्रा उवैसी..... 18
06. सूफी संत हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी ने 1998 ई. में पुस्तकालय शुरू किया..... 22
07. जिसका दिल साफ वही सूफीः बाबा लक्ष्मणदास..... 25
08. रूहानियत के निजाम, कलंदर निजामुल हक..... 29
09. मनुष्य का वैश्वीकृत रूप होता है गुरुः संत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी'..... 32
10. भौतिक देह में रूहानी पुरुष थे बाबा बादामशाह.....35
11. गुरुपूर्णिमा पर अजमेर में एक सूफी कलंदर का उर्स..... 38
12. उवैसिया सिलसिले के एक सिद्ध संत थे हज़रत हर प्रसाद मिश्रा उवैसी.....40
13. डीएवी स्कूल के छात्र ने रुहानियत में नाम कमाया..... 43
14. हम तेरे आंगन के दीए हैं, हमें आंधियों से बचाना.....46
15. विनोबा ने दरगाह बाजार में रामधुनी गाई तो - इधर का राम, उधर का रहीम.....49
16. यहां सिर नहीं, दिल सजदा करता है..... 52
17. शोध संस्थान की किताबों में रूहानियत की खुशबू.....54
18. हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी, जिन्होंने बताया कि नाम को स्वयं के भीतर..... 56
19. नाम की चादर ओढ़ो, गुरु तुम्हारा सारथी बन जाएगा..... 60
20. परिचय - श्री शिव शर्मा..... 63

लोगों पर ऐसा करम किया कि बन गए जन-जन के बाबा हुजूर

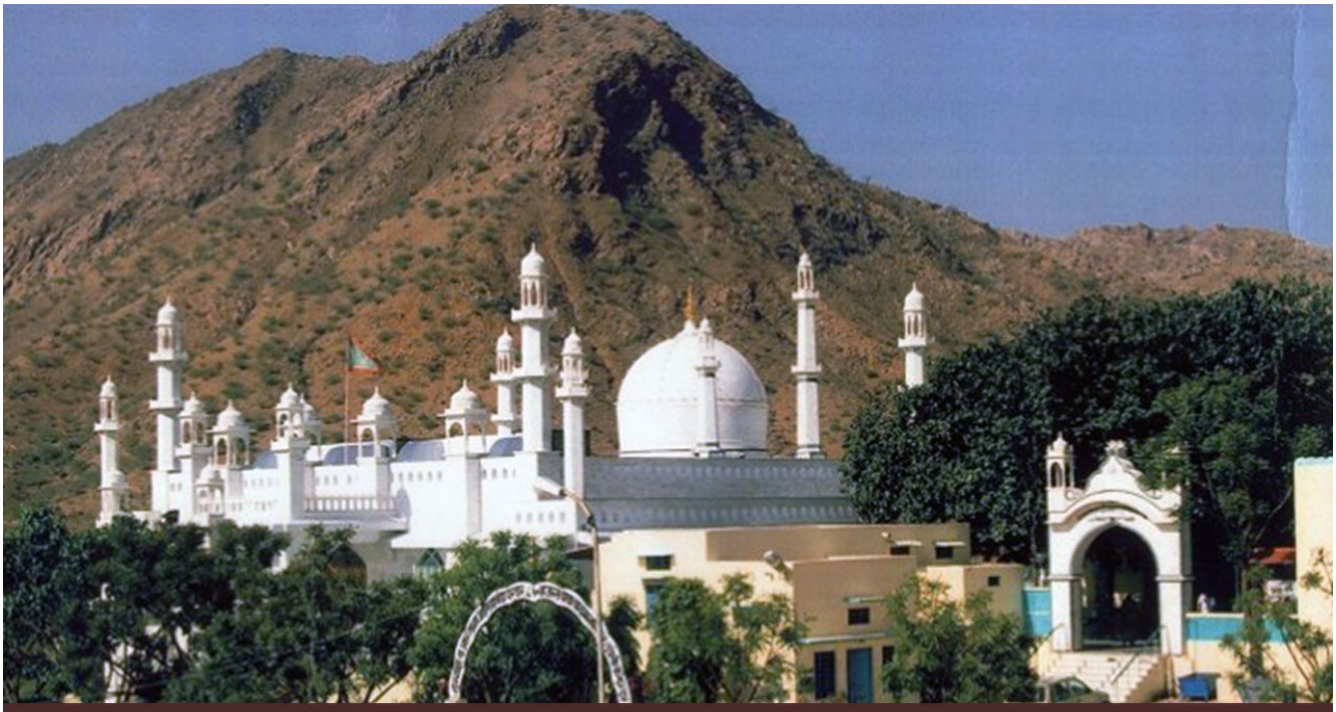

दरगाह – बाबा बादामशाह साहिब, सोमलपुर, अजमेर

प्राचीन काल से तपोभूमि के रूप में विख्यात रहे अजमेर शहर को आधुनिक युग में भी कुदरत ने एक कलंदर की सौगात दी है। बाबा बादामशाह उवैसी। उवैसिया फकीर कलंदर होते हैं। पीर परस्ती ही उनकी खुदा की बंदगी है। लगभग 1921 से 1965 तक यहां पर हजारों लोगों पर ऐसा करम हुआ कि वे जन-जन के बाबा हुजूर हो गए। मैनपुरी, उत्तर प्रदेश के गालव गांव से चलकर वे अजमेर आए। उन्हें यह प्रेरणा महात्मा प्रेमदास से मिली थी। दरगाह क्षेत्र में हकीम जहूर अहमद की हवेली में वे पहली बार सूफी संत हजरत निजामुल हक कलंदर से मिले और दीक्षा ली। पुष्कर के नाग पहाड़ में एक छोटी से गुफा में नौ साल तक कठोर तपस्या की। इस दौरान भारी वर्षा, कड़कड़ाती ठंड और गला देने वाली गर्मी को उन्होंने सहन किया। तपस्या पूरी

करने के बाद पहाड़ से नीचे उतरे तो खुश होकर पीर ने गले लगाते हुए कहा.....'मेरा बादाम, मेरा शेर'। इस तरह अजमेर को एक ऐसा महात्मा मिल गया। सोमलपुर के निकट सुरम्य पहाड़ियों की तलहटी में बाबा के रुहानी ठिकाने ने संगमरमरी दरगाह का रूप लिया। इसको साकार करने में उनके मुरीद हरप्रसाद मिश्रा ने भूमिका निभाई। बाबा साहब दीन-दुनिया के लिए दुआ करते थे। उनकी खास बात यह थी कि खुद से असंग लेकिन दीन-दुनिया के संग थे। कायनात के लिए भजन करते थे।

ऐसे थे बाबा साहब के पीर

उनके गुरु निजामुल हक साधना काल में बीस वर्ष तक ज़मीन पर नहीं लेटे। नींद ज़्यादा सताती थी तो बैंठे-बैठे ही झपकी लेते थे। खुदा के कामिल बंदे थे.....आजीवन रूहानियत का नूर बरसाते रहे। उनकी रुहानी बुलंदी का एक उदाहरण देखिए - अजमेर के निकट जिलावड़ा गांव है। इस पूरे गांव को एक ही नाम बख्श दिया और कहा कि पीढ़ी दर पीढ़ी यही नाम तुम सब पर करम करता रहेगा। आज 75 साल से ज़्यादा हो गए.....यहां उक्त कथन चरितार्थ हो रहा है।

श्रीकृष्ण जैसा कोई नहीं

सूफी फकीर होते हुए भी भगवान श्रीकृष्ण के प्रति हुजूर में परम भाव था। वे फरमाते थे कि प्रेम व कर्म रीति कृष्ण से सीखो। स्थान पर साधकगण जन्माष्टमी मनाते थे, खीर का भोग लगाते थे। गुरुदेव हज़रत हरप्रसाद मिश्राजी बताते थे कि कृष्ण चेतना सचमुच भोग ग्रहण करती थी। उनके लाडले शिष्य मिश्राजी ने श्रीकृष्ण के दर्शन किए थे। गुरुदेव के पास दिल्ली से सूट-बूट वाले संत महेंद्र मिश्रा आते थे.....उनको भी ऐसे दर्शन हुए और उन्होंने तो मालिक की कृपा से महाभारत का युद्ध भी चिदाकाश में देखा - अंतःकरण में जो चित्त होता है, वही साधना के प्रभाव से फैल कर चिदाकाश हो जाता है। यहां साधकों को बांसुरी की मीठी धुन सुनाई देना बाबा का करम ही है।

मेरे दर से फरियादी खाली नहीं लौटेगा

कुछ मुरीदों ने एक बार बाबा से सवाल किया कि आपके पर्दा कर लेने के 'बाद लोगों का क्या होगा? मुस्कराते हुए वे बोले - अरे, होगा क्या जो यहां की चौखट चूम लेगा वह खाली हाथ नहीं लौटेगा। जब आप शरीर में थे तो आने वालों को आश्वासन देते थे कि - तुमने हमें देख लिया.....बस, अब जाओ.....मालिक करम करेगा। आप अपने पीर के भरोसे ऐसी बात कहते थे। ऐसा कथन आज सच साबित हो रहा है - जयपुर से एक न्यायिक अधिकारी दो माह पहले यहां आए फिर दो दिन बाद ही वापस आए। उस वक्त दरगाह में कोई पत्रकार उन्हें मिल गया। बातचीत हुई, जज साहब ने कहा कि एक बार आने से ही उनके सारे काम हो गए.....यह बहुत चमत्कारी जगह है। बाद में वे मुझसे भी मिले थे। मुंबई से कोई रोगी आया। उसे ऐसी बीमारी थी कि हर संभव इलाज करा लेने से भी ठीक नहीं हुई। वह यहां आया। एक माह तक 3-4 घंटे आस्ताने में बैठता था। वह बिल्कुल चंगा हो गया। यहां नियमित आने-जाने वाले सारे लोग इस सच्चाई को जानते हैं। ऐसे अनेक उदाहरण हैं। समय, संयोग और कृपा के समन्वय से ऐसा प्रत्येक धाम पर होता है।

जड़ी बूटियां बोलती हैं

गुरुदेव ने बताया कि हुजूर को सैकड़ों जड़ी बूटियों का ज्ञान था। बाबा उनसे कहते थे कि बेटा ये वनस्पतियां भी बोलती हैं। एक निश्चित समय और तय मंत्र इनके पास जा कर बोलो तो ये अपना औषधीय उपयोग स्वयं बताती हैं। वे बताते थे नाग पहाड़ में ऐसा पौधा उगता था जिसकी दो पत्तियां खा लेने से एक सप्ताह भूख नहीं लगती थी। इसी तरह एक अन्य पौधे की पत्तियों से सोना बनाया जा सकता था। आपको ऐसी तेरह सौ औषधीय वनस्पतियों की जानकारी थी। यही कारण है कि आप दु:साध्य रोगों का भी इलाज कर देते थे।

समाधि बोलती है

आज देही तौर पर वे नहीं हैं किंतु आपकी समाधि बोलती है.....दुखियारों के काम करती है। कोई आदमी उच्च न्यायालय में केस जीत गया। सरकार अपील में जा रही थी वह आस्ताने में

बैठा था। आवाज आई - बधाई, अपील नहीं होगी - ऐसा ही हुआ। एक का बच्चा विदेश में बीमार पड़ गया, लाख कोशिश करने पर भी डॉक्टर उसे दवा नहीं दे पा रहे थे। आस्ताने में प्रार्थना की.....बाबा बोले - उठो! उसने दवा पी ली है। बाहर आकर फोन किया तो ऐसी ही खबर मिली। एक मुरीद को आस्ताने में कोई मंत्र सुनाई दिया। दो माह बाद तत्कालीन महाराज रामदत जी ने उसे वही मंत्र देते हुए कहा कि आगे इसका जाप करो। कोई दादाजी समाधि कक्ष में बैठे थे। आवाज आई - तुम्हें पोता दे रहा हूं। कुछ माह बाद ही उन्हें पोता प्राप्त हुआ। ऐसे तो अनगिनत दृष्टांत हैं। इन सबसे बढ़कर यह सच्चाई है कि वहां इस्मे आजम गूंजता है तथा दिखता भी है। बाबा साहब ने अपने मुरीद हज़रत हरप्रसाद मिश्रा को अपनी रूहानियत से सराबोर कर दिया था। इतने महान थे बाबा बादाम शाह! आप अपने मुरीद के साथ अद्वैत हो गए थे। नज़र वालों को आज भी अद्वैत रूहानियत एक दूसरे की समाधि पर प्रत्यक्ष दिखती है। यही अद्वैत चेतना इस सिलसिले के साधकों पर करम फरमाती है।

नजर से देखा, बला हट गई

प्रेत बाधा कैसी भी हो, वे केवल दृष्टि पालन से दूर कर देते थे। प्रत्यक्षतः कुछ नहीं करते। पीड़ित मनुष्य आता, पास बैठता, एक-दो औपचारिक बात करते और फिर कह देते कि अच्छा जाओ। पास बैठे लोग असमंजस में पड़ जाते कि बाबा ने किया तो कुछ भी नहीं और कह दिया कि जाओ। आपकी तंत्र शक्ति इतनी उच्च कोटि की थी।.....मौज में होते तो हथेली पर फूंक मारते तथा कह देते कि चलो, हो गया इलाज। कई लोग अभी भी इन बातों के साक्षी है।

भीतर ब्रह्म विद्या, लेकिन बाहर कोरे कागज जैसी सादगी

अध्यात्म जगत में वक्त के बादशाह थे। दूसरों का मुकद्दर बदल देने की कुव्वत रखते हुए भी कभी रुतबा नहीं जमाया। पैरों के नीचे दौलत का पहाड़, लेकिन सदैव सादा जीवन गुज़ारा। अजमेर में आपने उवैसिया मुरीदों को निहाल किया और आज भी कर रहे हैं। आपको शत-शत प्रणाम।

सादगी, सुकून और चेतना बोध का साकार रूप है बाबा बादाम शाह की दरगाह

दरगाह – बाबा बादामशाह साहिब, सोमलपुर, अजमेर

सादगी, सुकून एवं चेतना बोध की समन्वित अनुभूति का साकार रूप है बाबा बादामशाह की दरगाह। यहाँ ऊर्जा विलय की थपकी, आत्मीयता का स्पर्श और करुणा की तरलता है। बाबा हुजूर की दरगाह अजमेर के एक प्रमुख जागृत वस्तु ऊर्जा केंद्र पर स्थित है। वाराणसी की वास्तु ऊर्जा शोध समिति के एक विशेषज्ञ राम अकबाल यादव ने अपनी पत्रिका 'वास्तु ऊर्जा' में यह तथ्य स्वीकार किया है कि भारत में अभी तक ऐसे एक हजार प्रमुख ऊर्जा केंद्र सत्यापित किए गए हैं। उन्होने अजमेर आगमन पर हमें बताया कि बाबा बादामशाह, तारागढ़, अजयपाल बाबा सहित अन्य स्थान सघन ऊर्जा के केंद्र हैं।

उनके अनुसार जैसे धरती पर भूकंप केंद्र हैं, वैसे ही पराभौतिक केंद्र हैं। ऐसी बैल्ट के कई स्थान आध्यात्मिक साधना के प्रतिफल उर्वरक केंद्र हैं। ऐसी जगहों पर मंदिर, मठ, दरगाह, चर्च आदि बने हुए हैं तथा अभी भी बनाए जा रहे हैं। ऐसे केन्द्रों के यह लक्षण माने गए हैं - पराभौतिक या चेतन ऊर्जा का सघन घेरा होता है, जप-तप जल्दी सिद्ध होता है, देवी शक्तियों के अदृश्य वृत्त होते हैं, औलिया की मदद के लिए संबन्धित मिस्टिक ग्रुप (Mystic group) बुजुर्गों के आते रहते हैं और यहाँ पर अला बला दूर हो जाती है। सोमलपुर के निकट वाला पहाड़ी क्षेत्र शंभूनाथ की टेकरी भी चैतन्य बताया गया है। यादव के अजमेर आने का एक कारण - मुगल बादशाह अकबर जब पहली बार अजमेर आए थे, तो किस रास्ते से ख्वाजा साहब कि दरगाह गए थे। उनके अनुसार बादशाह वर्तमान मदार गेट से मूंदड़ी मोहल्ला वाले मार्ग से गुजरा था। वे मदार शाह का अध्ययन करने गए थे, लेकिन उसके विषय में कुछ नहीं बताया।

बाबा साहब के पीर ने पहले ही पहचाना

बाबा साहब के पीर निजामुल हक़ कलंदर उवैसी झाँसी से अजमेर आते रहते थे। गुरु शिष्य की पहली मुलाक़ात और मुरीद की नाम दीक्षा भी यहीं हुई थी। एक बार कलंदर साहब बाबा साहब को अपने साथ सोमलपुर के निकट वाले इस क्षेत्र में ले गए थे। जहां आज बाबा साहब का आस्ताना है वहाँ उस वक्त बड़ी चट्टान थी। निजामुल हक़ साहब बोले कि ऊपर देखो, क्या दिखता है? बाबा साहब ने देखा और आँखें विस्मित रह गईं। ज़मीन से आसमान तक सर्च लाइट जैसे रोशनी झिलमिला रही थी। निजामुल हक़ साहब ने बाबा साहब से कहा कि यह जगह बहुत रूहानी है। तुम यहीं निवास करो और अपना मुकाम बनाओ। गुरुदेव हज़रत हरप्रसाद मिश्रा साहब ने बताया था कि कलंदर हक़ साहब को पहले ही इस जगह के बारे में पता था। बाबा साहब के पर्दा लेने के बाद मिश्रा जी के गहरे ध्यान की अवस्था में यहीं अपने पीर की बनाई जाने वाली दरगाह का नक्शा उतरा था।

और भी हैं ऊर्जा केंद्र

ईस्वी पूर्व बौद्ध संत तारक लांमा को भी पुष्कर आने पर अजमेर के तारागढ़ पर ऊर्जा का आलोक दिखा था। उसके बाद यहाँ तारापीठ स्थापित की जो कालांतर में ध्वस्त हो गयी। ऐसे ही अजयपाल बाबा वाला स्थान तंत्र सिद्धि के लिए अत्यधिक प्रभावी भूमि है।

गुरुदेव ने देखे रूहानी मंज़र

आध्यात्मिक वास्तु ऊर्जा की दृष्टि से बाबा बादामशाह की दरगाह कितनी चैतन्य है, यह हमें गुरुदेव मिश्रा जी बताते थे। दरगाह के पास जो शंभूनाथ की टेकरी है, उसे आपने साक्षात समाधिस्थ शिव के रूप में देखा था। आपने कृपा कर ऐसे दर्शन अपने कुछ मुरीदों को भी कराए थे। इस दरगाह में इबादत करते हुए उन्होने सामने वाली पहाड़ी से मेघ गर्जन जैसा अनहद शब्द गूँजते हुए सुना। ऐसे प्रमाण अन्यत्र भी मिलते हैं। हमने पुस्तकों में पढ़ा है कि कैलाश मानसरोवर से आगे दुर्गम पहाड़ों के बीच ओम गूँजता रहता है.....अगम्य पर्वतों के मध्य वैदिक श्लोकों का उच्चारण श्रुतिगोचर होता है। बाबा साहब के आस्ताने में अपने आप कई मंत्रों की गूंज के अलावा अन्य धुन भी सुनी गई है। गुरुदेव कहते थे कि जैसे गंगा का जल ऊर्जावान है, अमरनाथ बाबा की पहाड़ियाँ धड़कती हैं, वैसे ही इस दरगाह के सामने वाले पर्वत भी स्पंदन करते हैं.....नज़र वाले को ही ऐसी अनुभूति होती है। इसे समझने के लिए बताया कि निज़ामुद्दीन औलिया के पास एक श्रद्धालु गया। निकट जाकर खड़ा हो गया। वे इमली के पेड़ के नीचे बैठे थे। वह आदमी जब पेड़ को देखता तो औलिया नज़र आते और जब औलिया कि तरफ नज़र करता तो वृक्ष दिखता। तो ये सब जगह एवं नज़र का खेल है। कभी आधी रात के बाद ये पहाड़ियाँ सोने की तरह चमकती हैं। रूहानी तरंगों के परावर्तन से ऐसे अनेक दृश्य दिखते हैं। गुरुदेव ऐसी कई बातें बताते थे।

साधकों के रूहानी अनुभव

यहाँ सफेदपोश रूहों का आना-जाना लगा रहता है। कभी चारों ओर अनिर्वचनीय सुगंध फैली रहती है जिसका विश्लेषण नहीं किया जा सकता है। गुरुवार के दिन भोग लगाते वक्त मज़ार पर

अलौकिक नूर दमकता हुआ दिखता है - स्वर्णिम रक्ताभ बादल, स्वर्ण बिन्दुओं से युक्त लाल कमल आदि। छोटे से आस्ताने में अनजानी विशाल दिव्यता के दर्शन विस्मित कर देते हैं। यहीं एक साधक के ध्यान में, हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी की दरगाह का नक्शा, निर्माण से छः माह पहले ही उतर गया था। चेतन शक्ति से जुड़े हुए ऐसे नज़ारे तो यहाँ रोज़ घटित होते हैं। आप कभी संध्या के समय पधारें, तो खुद ही अनुभव करेंगे कि यहाँ ज़र्रा-ज़र्रा महकता है, आपके भीतर सुकून भरता है। आपके हर सवाल का जवाब आपके अंदर ही कोई दे रहा होता है। आस्ताने में कदम रखते ही सुनाई देगा.....आओ बेटा!.....और बस मन फूल के जैसे खिल जाएगा। यदि रात को यहीं ठहरें तो ब्रह्ममुहूर्त के दौरान दरगाह परिसर में घूमिए, आपको स्वयं ही यहाँ की चेतन ऊर्जा का एहसास हो जाएगा.....शांति में स्पंदन, अंधेरे में चमक, आसमान से झरती रूहनियात तथा हवा में आपके मानसमंत्र की मीठी मीठी परागुंजार..... ।

पीर हमारे दिल में है तो हर रोज गुरु पूर्णिमा

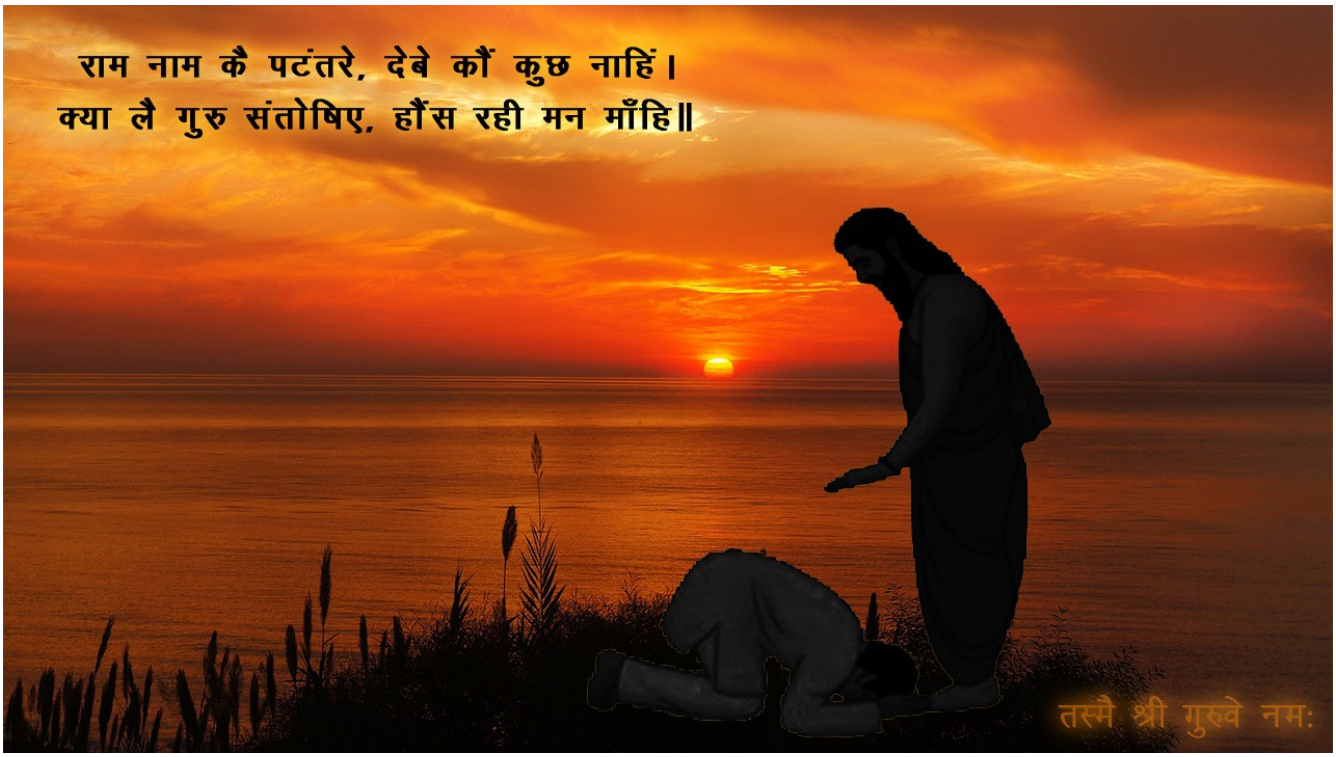

गुरु पूर्णिमा पर सूफी का कथन

हैदराबाद में मस्तान बाबा की दरगाह है। पूरा नाम है, सैयद मोहम्मद आली शाह र. ह.। बाबा सूफी थे। उनके साहबजादे सैयद इफ्तार आली शाह कादरी के मुरीद सै. मो. इशाक अली शाह, वहाँ बाबा की दरगाह में मिल गए। वे ट्रक ड्राईवर रहे हैं। उनसे बातचीत के कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं। मैंने सवाल किया कि क्या आपके यहाँ भी गुरुपूनम के दिन गुरु की पूजा होती है? वे बोले कि नहीं। मुझे हैदराबाद की जानकारी है.....यहां किसी भी सूफी दरगाह में गुरुपूनम मनाने का प्रावधान नहीं हैं। फिर थोड़ा ठहर कर बोले कि अगर पीर दिल में है तो मुरीद के लिए रोज ही गुरु पूनम है। पीर ही वली, पीर ही औलिया और पीर ही खुदा.....तो फिर किसी एक दिन की ही मोहतजी क्यों? मन में रोज चरण धोओ, रोज चरणामृत पीओ। कौन मना करता है? उसकी शान में जो जी चाहे करो.....कौन बाधा देता है?

खुद को अलग क्यों समझें?

पुनः कुछ पल शांत रहने के बाद मुसकुराते हुए कहा - मैं पीर का, पीर मेरा.....अंदर तो दोनों एक साथ रहे हैं.....फिर पूजा की जरूरत कहाँ है? खुद को अलग क्यों समझें? तुम्हारे कृष्ण ने कब कहा कि जन्माष्टमी मनाओ? वे तो समझाते हैं कि तुम न तो कर्ता हो और न ही भोक्ता हो?.....सब कुछ मैं कृष्ण ही हूँ। है न यही बात। फिर गुरुपूनम को गुरु की पूजा क्या मायने रखती है? समझो कि जो बात कृष्ण कहते हैं, वही बात गुरु भी कहता है। तुम गुरु को बाहर देखते हो, इसलिए पूजा की बात करते हो। मैं पीर को अपने भीतर देखता हूँ, इस कारण मस्त रहता हूँ। न माला, न अगरबत्ती, न पूजा, न प्रणाम। हमारा तो दिल ही है गुरु - धाम।.....आदाब.....फिर वे रुके नहीं, चले गए। बात तो सही है। जब तक पीर भीतर नहीं दिखता तब तक ही बाहर का पूजा-पाठ है। कहावत है न कि मन चंगा तो कठौती में गंगा। सीढ़ियाँ तो घर के अंदर जाने के लिए होती हैं अब कोई सीढ़ियों के ऊपर ही बैठ जाए तो.....भीतर प्रवेश नहीं कर सकेगा। हम सीढ़ियों को ही धोते हैं, लीपते हैं, अल्पना सजाते हैं। बस, इसी काम में मुग्ध हो कर वहीं बैठे हुए हैं .....आप बात सूफी कि कर रहे हैं.....तो सूफियत क्या है? एक नसीहत है - ईमान की, मोहब्बत की, पीर परस्ती की। जो इस आचार संहिता का पालन नहीं करता, वह सूफी नहीं है।

खूबसूरती तो अंदर है

एक सूफी संत थी राबिया बसरी। एक दिन हसन बसरी नाम के दूसरे संत उसके घर आए। बाहर जंगल था। उस दिन मौसम भी अच्छा था। हसन बसरी ने आवाज लगाई - अरे राबिया। अंदर क्या कर रही है.....बाहर आकार देख.....मौसम कितना खूबसूरत है। राबिया भीतर से ही बोली कि आप कब तक बाहर ही देखते रहोगे, असली खूबसूरती तो अंदर है। अंदर आओगे तो ही पता चलेगा। अपने गुरुदेव बाबा हरप्रसाद मिश्रा जी की ही बात है। एक दिन मुझे झिड़कते हुए कहा कि मेरे पास आकार मुंह से कब तक बोलते रहोगे? घर पर ही मनोसंवाद किया करो। तुम्हें चार से पाँच बजे तक का समय देता हूँ। यह आदेश था कि गुरु को अपने भीतर अनुभूत

करो। उक्त बात आज तक निभा रहे हैं। समय की पाबंदी भी हटा दी है। गुरु देता है तो ब्रह्मज्ञान देता है। नक्शबंदिया सिलसिले के खलीफा फजल अहमद ने मुंशी रामचन्द्र जी को ब्रह्मविद्या दी, लेकिन सांसारिक दृष्टि से गरीब ही रहे। रामकृष्ण परमहंस ने युवक नरेंद्र की गरीबी पर तरस खाकर दाल रोटी का इंतजाम किया, लेकिन दूसरी तरफ ब्रह्मज्ञान देकर स्वामी विवेकानंद बना दिया। इससे पहले का एक उदाहरण, आचार्य ब्रहस्पति ने विदर्भ की राजकुमारी लोपमुद्रा से विवाह किया। फिर उसे ऋषिका बना दिया। राजकुमारी की हैसियत से जो दौलत साथ लाई थी उसे स्वयं ने ही व्यर्थ समझ कर छोड़ दिया। अष्टावक्र ने उस राजा जनक को ब्रह्मज्ञान दिया जो राज प्रासाद (महल) के अंतिम कक्ष में चटाई पर सोता और मिट्टी के बर्तन में सादा भोजन करता था। जिसे गुरु की देन कहते हैं वह आत्मज्ञान ही है। तुम उसकी नज़र से देखते ही नहीं हो। पूरा जीवन साथ गुज़ार कर भी तुम्हारी नज़र नहीं बदली। वह जो तुम्हें देना चाहता है, तुम उसे लेना नहीं चाहते हो और जिसे वह फेंकता रहा, उसे तुम बटोरते रहे। तो ऐसे लोगों के लिए क्या आश्रम, क्या गुरुपूनम? आश्रमों में पैसे, पोस्ट एवं पहुंच का रुतबा। जाति, हैसियत का ठसका। ऐसे में गुरुपूनम सामान्य दिनों जैसी ही रहेगी। सूफी जैसे मनुष्यों के लिए तो हर पल गुरुपूनम है।

आठ सौ साल पहले यहाँ शंभूनाथ बाबा ने की थी तपस्या, टेकरी साक्षात महादेव के रूप में हुई साकार

नाथजी की टेकरी से ओम शब्द हुआ गुंजायमान

सोमलपुर स्थित बाबा बादामशाह की दरगाह के दाहिनी तरफ नाथ जी की टेकरी है। आठ सौ साल पहले यहां शम्भूनाथ बाबा ने तपस्या की थी। उस वक्त वे ओऽम का जाप करते थे। तब भी उस पहाड़ पर यही नाद गूंजता था। यह गूंज आज भी सुनी जाती है। अजमेर के सूफी संत बाबा हरप्रसाद मिश्रा यह बताते थे। उन्होंने अपने एक मुरीद को भी इसका साक्षात दर्शन कराया।

वह मुरीद बाबा हुजूर के महफिलखाने में बैठा हुआ साधना में लीन था। ब्रह्ममुहूर्त के समय अचानक ही उसे मेघगर्जन जैसे नाद ओऽम की गुंजार सुनाई दी। भीतर बैठे हुए भी बाहर का दृश्य प्रत्यक्ष हो गया। टेकरी और उसके पास वाली पहाड़ी स्वर्णमय हो गई। पहाड़ी इधर-उधर

सरकने लगी। साथ ही मेघगर्जन वाला अनहत नाद गूंजने लगा। उक्त नाद में ओऽम का ज्योतिर्मय रुप व्याप्त था। टेकरी साक्षात महादेव के रुप में साकार दिख रही थी। जाने कितनी देर बाद उसे अपने पीर की दिव्य आवाज सुनाई दी.....शाबाश.....! यहां ब्रह्ममुहूर्त में ऐसा अनेक बार होता है।

ब्रह्मांडीय धुन

यह नाद ब्रह्मांडीय धुन है। प्राचीन काल में यूरोप के दार्शनिक इसे म्यूज़िक ऑफ स्फिअर्स यानि विश्व का संगीत कहते थे। नासा ने इसे रिकॉर्ड किया है। यह नाद ज्योति का एकत्व है। इसके साथ सुनहरा प्रकाश या ज्योति प्रकीर्ण होती है। पूरे यूनिवर्स में यह गूंज है। हमारे सूर्य से भी उर्जा निकलते हुए जो आवाज रिकॉर्ड की गई है, वह ओऽम जैसी है। साधकों को ध्यान की गहराई में आरंभिक अन्य-अन्य नादों में अंततः ओऽम ही श्रुतिगोचर होता है। इस तरह बाहरी आकाश एवं आंतरिक चिदाकाश में यही नाद है।

नाथजी की टेकरी पर ऐसा क्यों

बाबा हरप्रसाद मिश्रा ने बताया था कि शम्भूनाथ बाबा सिद्ध योगी थे। आकाश मार्ग से रात्रि के समय यहां आते थे। पूरी रात तपस्या में लीन रहते थे। उनकी शिवोपासना इतनी गहरी थी कि पहाड़ी का शिखर महादेव की मुखाकृति जैसा हो गया। ध्यान से देखने पर आज भी ऐसे दर्शन होते हैं। दूसरी बात यहां ब्राह्मी ऊर्जा का घनत्व है। इसे आध्यात्मिक ऊर्जा, प्राण ऊर्जा, संजीवनी ऊर्जा व कॉस्मिक एनर्जी भी कहते हैं। यह ब्रह्मांड व्यापी है। नैसर्गिक तौर से ही यह पहाड़ उक्त ऊर्जा का एक केन्द्र है। भारत में ऐसे ऊर्जा के कई केन्द्र हैं। यहां प्रातः तीन से पांच बजे तक के दौरान इस ब्राह्मी शक्ति का जोर रहता है। इस ऊर्जा में स्वयंभुव ऐसी गुंजार है। यह पहाड़ अंदर से कच्चा है इसलिए उसमें ब्राह्मी शक्ति के प्रभाव से नांद गूंजता है। यहां बैठा हुआ साधक जब आज्ञा चक्र पर इस शक्ति को ग्रहण करने लगता है तब उसे चिदाकाश में यह सब प्रत्यक्ष हो जाता है। फिर गुरुकृपा तो सर्वोपरि है ही।

ऐसे कई आध्यात्मिक धाम

मंदिर, दरगाह, गिरजाघर, आश्रम ऐसी ही शक्ति के कारण आध्यात्मिक धाम बने हुए हैं। यहां आते ही मन शांत हो जाता है। बेचैनी मिट जाती है। उठकर लौटने का मन नहीं करता है। आखिर क्यो? ऐसा क्या है कि हम अपने घर में तो बेचैन रहते हैं और मंदिर में बैठते ही शांत हो जाते हैं। यदि वह स्थान चैतन्य है तो ऐसा अवश्य होता है। चैतन्य का मतलब वहां रुहानी ऊर्जा अधिक होती है। ऐसे स्थान के चारों तरफ आध्यात्मिक शक्ति की कनात या कवच होता है। परिसर में भी ऊर्जा भरी रहती है। यह अदृश्य होती है। दिखती नहीं है, बस अनुभूत होती है। ऐसे में अनेक स्थानों पर सोहम, शिवोहम मंत्र आदि की रुहानी धुन गूंजती रहती है।

रूहानियत और आत्मीयता की मूरत;
सूफी संत हज़रत रामदत्त मिश्रा उवैसी

आज हम उस संत को नमन कर रहे हैं, जिनकी रूहानियत की दृष्टि से उवैसिया सिलसिले का अजमेर में गौरव बढ़ाया। उस संत को प्रणाम कर रहे हैं, जिसने दोनों हाथों से अपने मुरीद को दीन एवं दुनिया लुटाई। जिसने जो मांगा, उसे वही दिया - धन, दौलत, संतान, रोजगार और रूहानियत में प्रगति। महात्मा आश्रम में मुरीदों के साथ प्रत्यक्ष में होली के रंग में डूबते थे, दिवाली पर पटाखे छोड़ते थे। पिकनिक में सबके साथ संगीत में गोते लगाते थे, लेकिन अपने पीर के साथ हर पल जुड़े रहते थे। ये थे हज़रत रामदत्त मिश्रा - गुरुदेव हरप्रसाद मिश्रा उवैसी के उत्तराधिकारी और बाबा बादामशाह के भीमसेन। बाबा हजूर इन्हें इसी नाम से पुकारते थे। इनका जन्म 25 अक्टूबर 1955 और गुरु पद पर प्रतिष्ठा 2008 व महाप्रयाण 24 अप्रैल 2013

को हुआ था। पत्नी का नाम सुधा। इनके बाद आश्रम के गद्दीनशीन मुनेन्द्र दत्त मिश्रा हैं। ये इनके भतीजे और गुरुदेव हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी के पौत्र हैं।

आंखों से टपकता था स्नेह

इनके व्यक्तित्व की बात करें तो इनकी आंखों में स्नेह टपकता था। बोली में रस झरता था। आमंत्रण में आत्मीयता गूंजती थी। इनके स्पर्श से आश्वासन होता था, आदेश में मीठी सख्ती एवं फटकार में सुधारवादी प्रेरणा रहती थी। ये गले लगते तो कलेजा शांत हो जाता था। माथा चूमते तो जैसे सिर से पैर तक प्रेम की रसधारा बह जाती थी। मैने देखा कि आश्रम में साधक इनके चारों ओर घेरा बनाकर बैठने में अपना सौभाग्य मानते थे। वक्त के बादशाह रामजी ने आश्रम में उल्हास और रूहानियत को सहचर, सहगामी एवं जीवंत कर दिया। यही कारण है कि आज भी आश्रम के साधक अपनी मीठी यादों में आंसू बहाते हुए रोमांचित हो जाते हैं।

रूहानी तेज से जगमग करता है आश्रम

प्रतिवर्ष इनके उर्स पर आश्रम में भंडारा होता है। यहां आने पर आप सबको पता चलेगा कि उनके रुहानी तेज से आश्रम किस तरह जगमग करता है। फकीर के भंडारे की प्रसादी का स्वाद कितना सुधामय होता है। महफिल के दौरान धड़कने वाला दिव्यानंद कितना मधुर होता है। मात्र पंद्रह वर्ष की उम्र से ही ये तंत्र विज्ञान को सिद्ध करने लगे थे। पिता हज़रत हरप्रसाद मिश्रा इनमें उवैसिया सिलसिले के सिद्ध मंत्र प्रवाहित करने लगे थे। दिन में पिता गुरु की सेवा और रात को चार-पांच घंटे की निश्चल इबादत। लगभग 30 साल तक ऐसा ही क्रम रहा। परिणामस्वरुप ये उच्च रुहानी लोकों में विचरण करने लगे। उल्लेखनीय है कि आरंभिक काल में आध्यात्मिक साधना के साथ एम.कॉम. की डिग्री भी अर्जित की। गायन, संगीत व तबला वादन में खुद को बेजोड़ बनाया। महफिल के दौरान जब ये कलाम पेश करते थे तो महफिल की दीवारें भी गाती थी.....और रूहानियत की दमक साकार हो जाती थी। तबले की थाप साधकों के सूक्ष्म चक्रों को सक्रिय कर देती एवं गले की तान कई साधकों को भाव-विभोर करते हुए नृत्य के लिए उठा देती थी। जिन्होंने भी उनका वह दौर देखा वे आज भी स्वयं को धन्य भाग्य मानते हैं।

आश्रम में बैठे-बैठे सोमलपुर दरगाह में आने वाले की पीड़ा दूर कर देते

कोई सोच ही नहीं सकता था कि रामगंज में कटपीस की दुकान पर बैठने वाला और डीएवी कॉलेज में पढ़ने वाला वह युवक भविष्य में आध्यात्मिक जगत के इतने ऊंचे मुकाम पर पहुंच जाएगा.....कि यही लड़का आगे चल कर तंत्र विज्ञान का बेजोड़ संत बनकर सैकड़ों दुखियों के दुःख दूर करेगा। आलम यह था कि ये आश्रम में बैठे रहते और सोमलपुर वाली दरगाह में आने वाले प्रेतबाधा से ग्रसित लोगों की पीड़ा दूर कर देते थे। रोज रात के समय कई साधकों के घर सूक्ष्म शरीर से पहुंच जाते, देखते कि वो क्या कर रहे हैं और जिस पर दिल आ गया उसे ध्यान की गहराई में डुबकी लगवा कर लौट जाते। ये सारे अनुभूत सत्य हैं। वे कहते थे कि संत सदैव साधक के भीतर बोलता है.....देता है तो चुपचाप देता है.....अंतर्मन को रौनक करता है.....अपनी नज़र से ही साधक को चढ़ाते हुए समाधि की तरफ ले जाता है। वे किसी के चिदाकाश में उजागर होते और हाथ पकड़ कर रूहानी लोकों में ले जाते, वहीं इबादत के रहस्य समझाते, और अन्य महात्माओं का आशीर्वाद दिला देते। ये फरमाते थे कि फूलमाला - प्रसाद की भेंट से संतों का आशीर्वाद नहीं मिलता है। वह तो जप-तप-लगन व भीतर की निर्मलता से स्वतः ही झरता है। ये अक्सर यह भी कहते थे कि मेरे पास बैठने से कुछ नहीं होगा। उनके (पीर साहब हरप्रसादजी) आस्ताने में जाप करो, तभी बात बनेगी। फकीर किसी का पिता, पुत्र, चाचा, ताऊ नहीं होता, वह केवल फकीर होता है। उसके पास बैठने से ही कल्याण कर्म अपने आप होते रहते हैं।

सुर साधना में सिद्ध थे

आपकी मस्ती का आलम ऐसा था कि जाहिरा तौर पर कैरम खेलते.....ताश खेलते किंतु खुदाई मुकाम से पल भर के लिए भी अलग नहीं होते थे। सांस के साथ नाम चलता था। सुर-साधना में सिद्ध थे। किसी के भी मनोगत विचारों को पकड़ लेना उनके लिए मामूली बात थी। जब ध्यान चढ़ता था, तो प्रस्तर प्रतिमा की तरह निश्चल हो जाते थे। झांसी व रामपुर की यात्रा के दौरान हमने उनका यह रूहानी वैभव देखा है - अपने सूक्ष्म शरीर को प्रकाश के किरण-पुंज के रूप में फकीरों की समाधि के भीतर प्रवेश करा देते और ऊपरी तौर पर सामान्य बने रहते। जब

योग मुद्रा में बैठते तब उनके शरीर से आर-पार देखा जा सकता था। यह भी साधकों का अनुभूत सत्य है। दो वाकये दृष्टांत के तौर पर प्रस्तुत हैं - एक साधक गुरुदेव हरप्रसादजी के आस्ताने में ध्यान मग्न बैठा था। ये अपने कक्ष में कुछ मुरीदों के साथ बातचीत कर रहे थे। जाने क्या मौज उठी कि बोले चलो, भाई साहब को बुलाते हैं। वे पांच मिनट में आ जाएंगे। उधर उस साधक को जोरदार झटका लगा। ध्यान टूट गया और वह पास आ गया। दूसरी घटना इनके पर्दा फरमाने के बाद की है। आश्रम में पिता पुत्र की समाधि आमने सामने है। कोई जनाब पिताजी के आस्ताने से निकल कर सीधे ही बाहर जा रहे थे। आपके अस्ताने से ध्वनि बम जैसी आवाज फूटी.....रुको, आज सीधे ही जा रहे हो। ऐसे सैकड़ों दृष्टांत हैं।

सबका मन रखा, सबको संग रखा

इन्होंने सबका मन रखा, सबको संग रखा। उनके मनचाहे ढंग से रखा। इनके कारण पूरा आश्रम सांस लेता हुआ महसूस होता था। यहां की हवा में रुहानी कलाम सुनाई देते थे, दीवारों पर अलौकिक नूर दमकता था। परिसर में पांव रखते ही इनकी मौजूदगी का अहसास कराने वाला मोगरा महकता सा अनुभूत होता और इनकी रुहानी हस्ती आगंतुकों के लिए धूप की तपन दूर कर देती थी।.....याद आता है इनके महाप्रयाण का दिन - पूरा आश्रम धाड़ें मार-मार कर रो रहा था.....आश्रम के पेड़ पौधे सुबक रहे थे.....दीवारों से रोदन फूट रहा था.....हवा में हाहाकार.....हर आंख में पानी, हर गाल पर आंसू.....चारों तरफ एक ही सिसकी.....ऐसे कैसे चले गए। 12 घंटे तक किसी ने पानी नहीं पीया, न भूख, न प्यास, न नींद, न थकान। बस एक ही रूलाई.....भैया ऐसे क्यों चले गए।

सूफी संत हज़रत हर प्रसाद मिश्रा उवैसी ने 1998 ई. में पुस्तकालय शुरू किया, अब यहां 1440 ग्रंथ व किताबें

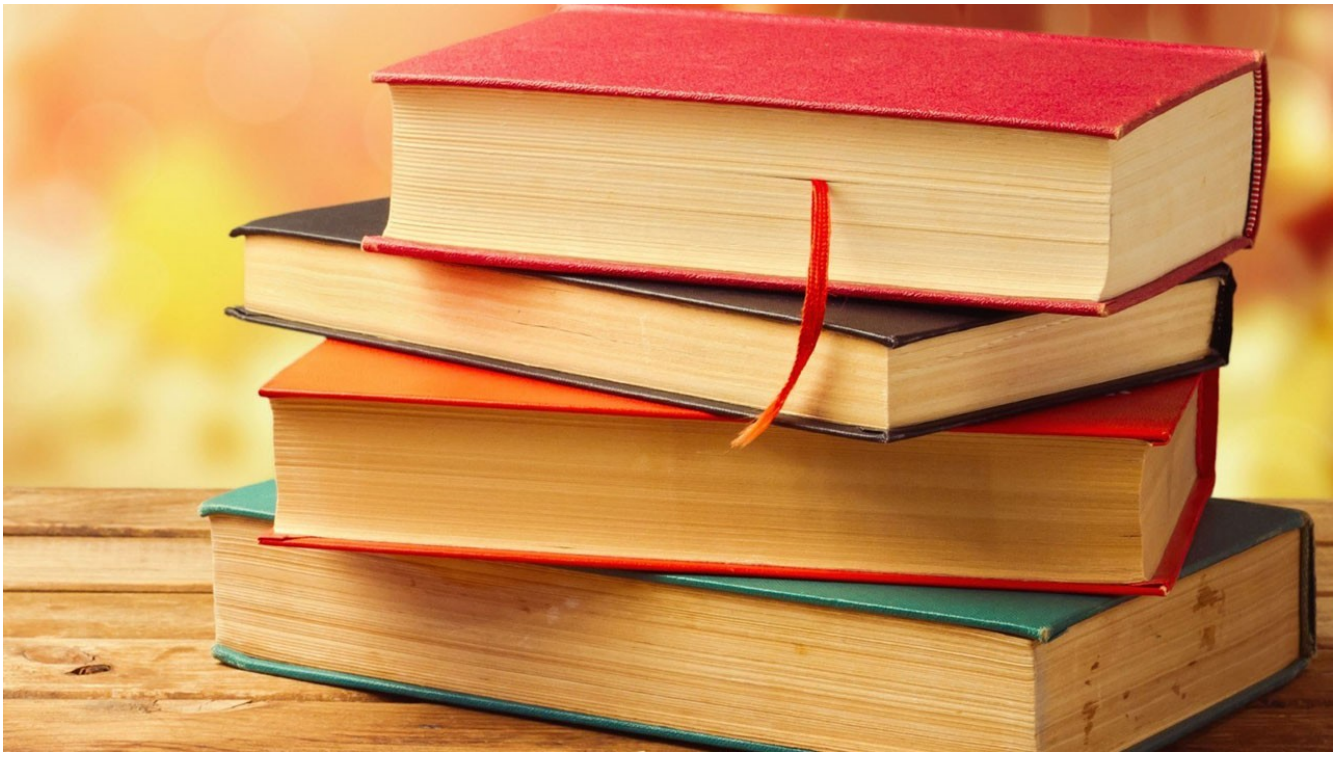

उवैसिया रूहानी सत्संग आश्रम अजमेर वासियों के लिए अनजाना नहीं है। यहां बाबा बादामशाह आध्यात्मिक शोध संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष रूहानियत संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन होता है। इस शोध संस्थान का पुस्तकालय अनमोल है। सूफी संत हज़रत हर प्रसाद मिश्रा उवैसी ने 1998 ई. में उक्त पुस्तकालय शुरू किया था। आज इसमें 1440 ग्रंथ व किताबें हैं। गुरुदेव ने इस संदर्भ में कहा था कि ज्ञान का लिखित रूप पुस्तक होती है, प्रवचन उसका मौखिक रूप एवं संत ज्ञान का रूहानी रूप होता है।

इस पुस्तकालय में इन तीनों का संगम है। यहां बैठ कर पढ़ते समय लगता है कि गुरुदेव पास में खड़े हैं.....लिखते वक्त महसूस होता है कि वे पीठ थपथपा रहे हैं.....और चिंतन के दौरान उनका रूहानी स्पर्श गदगद कर देता है। इसलिए यह पुस्तकालय अनमोल है। पहली खास बात तो यह है कि शोध संस्थान व पुस्तकालय गुरुदेव के एकल प्रयासों का परिणाम है। आपने वेद, पुराण, उपनिषद, कुरान, महाभारत, रामायण आदि अमूल्य ग्रंथ जुटाए। ऐसे ही सर्वधर्म समभाव वाले वैचारिक दर्शन को व्यवहारिक रूप देते हुए इस्लाम, वैष्णव, जैन व ईसाई संस्कृति से सम्बद्ध मूल्यवान पुस्तकों का संकलन किया। इन दिशाओं में शोध कार्य करने वाले विद्यार्थियों को यहां उपयोगी सामग्री मिल सकती है। थोड़ा और आगे बढ़ें - श्रीराम व श्रीकृष्ण से लेकर गौतम, महावीर स्वामी की जीवनियों के अलावा शंकराचार्य व अन्य मध्यकालीन एवं आधुनिक महात्माओं के जीवनवृत्त भी यहां उपलब्ध हैं। राधास्वामी संतमत और आचार्य रजनीश के वैचारिक दर्शन को उजागर करने वाले पचास से ज्यादा ग्रंथ भी मिल जाएंगे।

कल्याण के विशेषांक सहित अनेक दुर्लभ ग्रंथ उपलब्ध

एक बार यहां हिंदी के विख्यात साहित्यकार नरेंद्र कोहली आए थे। इस लाइब्रेरी में कल्याण के विशेषांकों सहित स्वामी रामकृष्ण एवं विवेकानंद पर अपेक्षा से अधिक किताबें देख कर वे मुग्ध हो गए। वे रामकथा पर लिखित अपने उपन्यासों का पूरा सेट देकर गए। यहां के साहित्य सेक्शन में सौ वर्ष पुराने उपन्यास चंद्रकांता संतति के सारे वाल्यूम से ले कर आधुनिकतम लेखिका मैत्रेयी पुष्पा तक की रचनाएं देख कर वे बोले कि किसी निजी पुस्तकालय में साहित्य का ऐसा संग्रह निश्चय ही प्रशंसनीय है। ऐसे ही असम के चीफ जस्टिस एस. एन. भार्गव साहब भी आर. सी. शर्मा साहब की पुस्तक का विमोचन करने के लिए आश्रम आए थे। तब शोध संस्थान में गीता पर अनेक विद्वानों की टीकाओं का अवलोकन करते हुए वे बोले कि इट इज़ अनएक्स्पेक्टेड कलेक्शन। श्यामाचरण लाहिड़ी का गीता भाष्य चार खंडों में बहुत कम जगह मिलता है। यहां रखी हुई चरक संहिता को उठा कर उन्होंने सिर पर से लगा लिया था। यहां एक

दुर्लभ ग्रंथ है - आत्मा का विज्ञान। इस किताब में देह, जीवात्मा, चित्त-मन-बुद्धि आदि का सचित्र वर्णन है। इन सब के वर्ण (रंग) और जीवात्मा के साथ यात्रा वाली स्थिति का चित्रात्मक विश्लेषण अद्भुत है। देह में आत्मा की स्थिति कहां व कैसी होती है, यह समझाया गया है। मन का रंग चंद्रमा जैसा, चित का हीरे की कनी जैसा-ऐसे स्पष्ट किया गया है।

गुरुदेव की लिखी बीस से अधिक किताबें

यहां गुरुदेव की लिखी हुई बीस से अधिक किताबें हैं, जिनमें 'देह से अदेह' और 'कुंडलिनी शक्ति' विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें अध्यात्म विज्ञान के अनेक पक्षों को सरल तरीकों से समझाया गया है। कल्याण के बीस से ज्यादा विशेषांक, अंग्रेजी भाषा की शताधिक पुस्तकें तथा चिकित्सा, रेकी एवं एक्युप्रेशर संबंधी किताबें भी यहां की शोभा बढ़ा रही हैं। आश्रम के साधकों के लिए न्यूनतम मासिक सदस्यता शुल्क है। किताबें घर के लिए भी इश्यू की जाती हैं। यहां का प्रभार श्री गुरुदत्त मिश्रा के पास है। यहां दो-दो संतों का रुहानी स्पंदन है, बोध शक्ति की तरंगे हैं, रुहानियत का आमंत्रण है और कुछ कर गुजरने का उदबोधन है।

जिसका दिल साफ वही सूफीः बाबा लक्ष्मणदास

बाबा के अनमोल वचन

- **जो समाज को आगे ले जाए वही अग्रवाल**
- **जिसका दिल साफ वह सूफी**
- **जिसका मुसल्ला मजबूत वह मुसलमान**
- **जिसका हृदय विशाल वह हिंदू**
- **जिसका मन काबू में वह मनुष्य**

आपने गहन ध्यान में भगवान श्रीकृष्ण को गीता का श्लोक बोलते हुए सुना। वनवासी श्रीराम और लक्ष्मण के दर्शन किए। कुरान की आयतें आपके भीतर मुखरित हो जाती थीं और कभी-कभी वेद की ऋचाएं वाणी से झरने लगती थीं। ऐसे सूफी संत थे बाबा लक्ष्मणदास जी।

फकीरों की मंडी समझे जाने वाले रामपुर बरेली के पहले उवैसिया सिलसिले के सूफी संत बाबा लक्ष्मणदास का समाधि मंदिर है। समाधि मंदिर का मतलब है, जहां उनकी समाधि है, वहां मंदिर की तरह आरती होती है। आपने सूफी होते हुए भी ब्रह्म-ऋषि की पद्मासन की मुद्रा में बैठे हुए प्राणोत्सर्ग किया था। आपकी समाधि भी इसी प्रकार है। रामपुर के धोसियान मोहल्ला में आपका समाधि मंदिर है। यहां पर आपके गुरुभाई स्वामी ब्रह्मानंद जी की भी समाधि है। प्रत्याशियों के मुताबिक गुरुभाई होते हुए भी ब्रह्मानंद जी सदैव शिष्यभाव से बाबा की सेवा करते रहते थे। जब ब्रह्मानंद जी ने देह छोड़ी तो सारे उपाय करने के बाद भी अंतिम संस्कार नहीं हो पाया। तब एक अन्य साधक में अंतर्वाणी फूटी कि गुरु-शिष्य एकाकार रहे। अतः बाबा के पिछवाड़े में ले जाकर इनको समाधि दो। इसके अलावा इस परिसर में राधा-कृष्ण और महादेव के मंदिर भी हैं। शिव मंदिर में बजरंगबली की जलाली तस्वीर भी है।

बाबा का जीवन परिचय

रामपुर के डॉ. अजय गोयल के अनुसार बाबा का जन्म चंदौसी में हुआ था। उनका गोत्र गोयल था। बाबा लक्ष्मणदास जी बचपन में ही अनाथ हो गए थे। चाचा के साथ दुकान पर थका देने वाला काम और घर पर रोटी के साथ चाची की डांट खाते-खाते बाबा लक्ष्मणदास जी हताश हो गए थे। बस तभी नियति ने करवट बदली। उवैसिया सिलसिले के भारत में प्रवर्तक फकीर हज़रत सुहाब खां साहब ने रुहानी डोर से बांधकर इस बालक को अपनी ओर खींच लिया। बाहर की घटना चाहे जैसी रही हो, लेकिन आंतरिक सच्चाई यही थी। इतिहास में विवरण मिलता है कि आदि शंकराचार्य के साथ भी ऐसा ही हुआ था। उनके गुरु ने बैठे-बैठे ही उन्हें अपनी ओर खींच लिया था। इसी प्रकार बाबा भी सुहाब खां साहब के पीछे-पीछे चलने लगे तो अचानक वे बोले, तू बनिया, मैं मुसलमान, अपना मेल कैसा होगा। तब उस बच्चे लक्ष्मण ने जवाब दिया कि मेरे माता पिता बनिए थे, जो मर गए हैं। अब मैं अनाथ लक्ष्मण हूं और आप साधु हैं। मैं नहीं जानता हूं कि मुसलमान क्या होता है। बस इतना सुना है कि साधु भगवान का रूप होता है। सुहाब खां साहब ने उनको गले लगा लिया।

शुरू हुई लक्ष्मणदास बनने की यात्रा

यहीं से लक्ष्मण की बाबा लक्ष्मणदास बनने की यात्रा शुरू हो गई। बाबा ने लक्ष्मण की पहले ही दिन कठिन परीक्षा ले ली। तीन दिन तक रोटी का कोई जुगाड़ नहीं बैठा। बालक लक्ष्मण फिर भी सामान्य तौर पर उनकी सेवा करता रहा। फकीर ने देख लिया कि बच्चा मजबूत है और अपनी एक ही नज़र में उनके प्रतिकूल संस्कार काट दिए। सुहाब खां साहब के मुरीद अल्लानूर खां साहब ने आगे का काम किया। लक्ष्मणदास जी की अंतः चेतना को आज्ञा चक्र पर स्थिर कर दिया। इससे देह के नए संस्कार बनना समाप्त हो गया। एक बार अल्लानूर खां साहब बाहर से छह दिन तक नहीं लौटे तो लक्ष्मणदास पूरे समय तक भूखे रहे, जागते रहे और अल्लानूर खां साहब का इंतजार करते रहे। समय और आगे सरका.....लक्ष्मणदास सूक्ष्म रुहानी मंडलों को पार करते गए। इतना सब हो जाने के उपरांत भी उनकी नाम दीक्षा अभी तय नहीं हुई थी। यह काम सुभानशाह साहब ने किया जो अल्लानूर खां साहब के उत्तराधिकारी हुए। लक्ष्मणदास में पीर परस्ती बेमिसाल थी। पीर को भोजन कराने के बाद खुद प्रसाद ग्रहण करते थे, रात को उनके बाद सोते थे और सुबह उनसे पहले ही जग जाते थे। सुभानशाह साहब ने एक बार अपने एक और खास मुरीद मौलाना मो. गुल खां साहब को कहा कि लक्ष्मण तो दुनिया में रहते हुए भी दुनियादारी से एकदम अलग है। तब पीर ने अपने इस मुरीद को मुक्त कर दिया कि जाओ, नेकी और ईमान की रोशनी फैलाओ। इस तरह बाबा लक्ष्मणदास लोक कल्याण में प्रवृत्त हुए। वे कहते थे जो कोई मनुष्य को ब्रह्म तक ले जाए वह ब्राह्मण है, जो समाज को शौर्यवान बनाए वह क्षत्रिय है, जो समाज को प्रगति के पथ पर आगे ले जाए वह अग्रवाल वैश्य है और जो इन तीनों वर्गों की दुर्बलताओं को दूर करे या नज़रअंदाज कर दे वह शूद्र है। इसलिए शूद्र भी सम्मानीय है। बाबा के ऐसे विचारों ने उदारवादियों को तो उनका भक्त बना दिया, किंतु कट्टरवादी उनसे नाराज रहने लगे। आपमें वेद, कुरान, गीता आदि ग्रंथों का सत्य इस तरह प्रवाहित होता था कि किताबी विद्वान उनके सामने निरुत्तर होकर सिर घुमा लेते थे। उनकी नज़र में ही लोगों के काम हो जाते थे। डॉ. अजय अग्रवाल के नाना शांतिशरण, एक अन्य बुजुर्ग देवीदयाल गर्ग और वर्तमान वयोवृद्ध सेवादार रामावतार की 105 वर्षीय मां ने बाबा की जीवनशैली देखी थी। उनकी नज़र से होते रहने वाले चमत्कार देखे थे और देखा था कि वे किस तरह अनजान बने रहते थे।

किसी गरीब बच्ची की शादी करा दी, किसी को मुकदमा जितवा दिया, किसी के मृत युवा पुत्र को पुनर्जीवन दे दिया, कभी अनावृष्टि में बरसात करा दी आदि...आदि। ऐसे काम तो उनकी अदृश्य कृपा के फलस्वरूप होते रहते थे। विशेष बात तो यह थी कि उस कट्टरवादी दौर में भी उन्होंने तीन मुस्लिम फकीरों की कृपा प्राप्त की थी और सुभानशाह साहब ने उन्हें गद्दीनशीन किया। आपके मुरीदों में हिंदू और मुसलमान दोनों थे तथा आज भी रामपुर में मुस्लिम घरानों में उनके श्रद्धालु आपको तहेदिल से सलाम करते रहते हैं। रामावतार के पुत्र सुनील कुमार बताते हैं कि बाबा के समाधि मंदिर में मुरादाबाद, बरेली, सूरत, अजमेर व अन्य दूरस्थ स्थानों से भी चारों वर्ण से श्रद्धालु आते रहते हैं। वे बताते हैं कि यहां विकास कार्यों के लिए चंदा नहीं मांगना पड़ता है, समाधि कक्ष में जाकर केवल अरदास करने से ही अपेक्षित राशि चुपचाप ही उपलब्ध हो जाती है, अर्थात लोग स्वतः ही अपना-अपना अंशदान दे जाते हैं।

अब एक थोड़ी अनहोनी घटना

सेना में कोई सूबेदार आपके यहां आते रहते थे। उनमें बड़ा भक्ति भाव था। एक बार उन्हें छुट्टी नहीं मिली फिर भी वे बाबा के पास रह गए। जब नौकरी पर लौटे तो देखा की उपस्थिति पंजिका में अवकाश वाले दिनों में भी हस्ताक्षर किए हुए हैं। बाबा का ऐसा करम देखकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और उनकी सेवा में लगे रहे। बहुत जाग्रत है यह समाधि। हमसे बोलती है, बात सुनती है, गलत विचार पर टोकती है, राह दिखाती है, बरकत देती है और प्रत्येक श्रद्धालु को आंतरिक सुख की अनुभूति कराती है। आपने संवत् 1950 की जेठ बड़ी पंचमी के दिन समाधि ली थी। इसी तिथि को हर वर्ष आपके भंडारे का आयोजन किया जाता है। यहां की व्यवस्था के लिए अग्रवाल सेवा समिति बनी हुई है, जिसके अध्यक्ष शिवहरि गर्ग हैं।

रूहानियत के निजाम, कलंदर निजामुल हक

अजमेर वाले बाबा बादामशाह के पीर हैं ये कलंदर निजामुल हक। उवैसिया सूफियों में दादा हुजूर के नाम से विख्यात हैं। हज़रत बादामशाह की दरगाह में इनका सालाना उर्स धूमधाम से मनाया जाता है।

कौन हैं ये कलंदर

आपका जन्म मेरठ धौलाना गांव में हुआ था। सिविल इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त की। 60 वर्ष तक गुरु की तलाश में भटकते रहे। फिर रामपुर में कामिल फकीर मौलाना सैयदाना मोहम्मद गुल खां साहब मिले। आपको देखते ही बोले कि 'आ गया गद्दी लेने वाला'। जब नाम दीक्षा हुई, अनुपम साधना एवं अनूठी गुरुभक्ति से आपने पीर का दिल जीत लिया। आप रुहानियत के निजाम हो गए। साधना ऐसी करी कि बीस साल तक जमीन से पीठ नहीं लगाई। बैठे-बैठे ही

नींद पूरी कर लेते थे। पीर के आदेश से आप घुमंतू फकीर की तरह चारों तरफ आध्यात्मिकता का प्रबोधन करते रहे। इसी क्रम में अजमेर भी आते रहे थे। आप रईसी पोशाक में रहते थे, लेकिन फकीरी अंदाज से करम करते थे।

अजमेर से रहा है नाता

इस शहर को आपने बाबा बादामशाह जैसा कलंदर फकीर दिया। वे इन्हीं के शिष्य रहे हैं। इस तरह सूफी उवैसिया ज्योति को आप झांसी से अजमेर लाए। यहां सोमलपुर शाही का बाड़िया वाली पहाड़ी पर आपने चेतन ऊर्जा का गगनचुंबी आलोक देखा, बाबा हुजूर को भी दिखाया। फिर उन्हें यहीं अपना मुकाम बनाने का आदेश दिया। फलस्वरूप, आज वहां बाबा बादामशाह की दरगाह है। आप अजमेर में एक हकीम के पास ठहरते थे। वहां बाहर की तरफ एक कमरा, आपका हुजरा था। यहां एक विधवा के निर्दोष बेटे को फांसी की सजा से बचाया। बाबा बादामशाह को रूहानियत की बुलंदी पर पहुंचाया। सोमलपुर शाही का बाड़िया में आप एक मदरसा व अनाथालय शुरू करना चाहते थे। इसके लिए हैदराबाद के तत्कालीन निजाम ने सात लाख रुपए का चेक भी भेज दिया। किंतु कुछ लोगों में पैसे का लालच देखकर आपने अपना इरादा बदल लिया। चेक वापस लौटा दिया। यहीं एक मुरीद पर ऐसी कृपा करी कि इबादत के दौरान उस पर आकाश से फूल बरसते थे। पूरा गांव उक्त करिश्मे को देखता था।

जिलावड़ा गांव को निहाल कर दिया

अजमेर में श्रीनगर के पास वाला जिलावड़ा गांव। सूफियत की दृष्टि से इस गांव का एक ही पीर है - हज़रत निजामुल हक कलंदर। इन्होंने 75 साल पहले यहां की सारी आबादी को एक ही मंत्र बख्शा और कहा कि पीढ़ी दर पीढ़ी कयामत तक यही मंत्र इस गांव के लोगों पर करम करता रहेगा। जिलावड़ा निहाल हो गया। उपलब्ध जानकारी के अनुसार अन्य किसी भी महात्मा ने इस तरह पूरे गांव पर ऐसा चिरकालीन करम नहीं किया। गांववासियों के लिए आप दादा हुजूर हैं। आपकी दरगाह भी दादा साहब की.....दरगाह के नाम से विख्यात है। यह अजमेर का सबसे

समृद्ध गांव माना जाता है। यहां की बेटियां ब्याह कर जिन गांवों में गई हैं, वहां पर भी उन सबको दादा हजूर की रहमत मिली है।

रूहानी व्यक्तित्व

कठोर साधना के कारण आंखों में ऐसा जलाल था कि नज़र उठाकर देख लिया तो हरा पेड़ सूख गया। आंखों पर हाथ फेर दिया तो रोशनी लौट आई। समाधिस्थ हो सूक्ष्मलोक से मृत की रूह को ले आए, उसके शरीर में प्रविष्ट करा दी और वह पुनर्जीवित हो गया। झाँसी में 13 कलंदर तैयार किए जो ब्रह्मांड में सबकुछ देख सकते थे। उन सबको रुहानी शिक्षण के लिए चारों दिशाओं में भेज दिया। ख़ुदा की परावाणी उनके भीतर गूंजती थी। आस्ताने में नूरानी आलोक दमकता है। समाधि से निकलने वाले आदेश साफ सुनाई देते हैं। उनकी नसीहत थी कि फकीर खामोश रहे। खुद को उजागर नहीं करे। सेवा करे पर जताए नहीं। अपनी आंख व जीभ को अंतर्मुखी रखें यानी रस स्वाद से दूर रखें। किसी से खिदमत नहीं लें। हर सांस में ख़ुदा को याद रखो। आपका उर्स झांसी, अजमेर व जिलावड़ा में संपन्न होता है।

मनुष्य का वैश्वीकृत रूप होता है गुरु:
संत हरप्रसाद मिश्रा 'उवैसी'

अजमेर के सूफी संत हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी बाबा बादामशाह के मुरीद रहे हैं। आश्रम के सभी साधक व अन्य आगंतुक आपको पिताजी कहते हैं। आप रूहानियत की बुलंदी पर थे।
आप कहते थे कि मनुष्य के व्यक्तिगत मैं का ब्रह्मांडीय हो जाना ही खुद ब्रह्म हो जाना है और अपने वजूद का वैश्वीकरण कर देना ही फकीरी है। आपने इसे सिद्ध भी किया। साथ गुरु सेवा की मिसाल प्रस्तुत की - उनके प्रति शुक्राना के रूप में सोमलपुर वाली दरगाह बनवा दी जो पूरे देश में मिनी ताजमहल की तरह विख्यात है।

रामगंज से गुरु लोक तक

आपका जन्म रामगंज में सन 1925 में हुआ था। पढ़ाई डीएवी स्कूल और गवर्नमेंट कॉलेज में पूरी हुई। नौकरी रेलवे वर्कशॉप में क्लर्क से कार्यालय अधीक्षक के पद तक सम्पन्न हुई। सुशीला देवी जी से विवाह किया। गृहस्थी में चार पुत्रियां और तीन पुत्र। पहलवानी में उस्ताद। क्लासिकल संगीत में मास्टर। रेलवे यूनियन के तेज-तर्रार नेता। बस ऐसा था उनका जीवन रामगंज में। फिर 1952 के आसपास बाबा हुजूर बाबा बादामशाह से मुलाकात हुई। फकीर की आंखों ने आपको देखा, परखा और अपना लिया। गृहस्थी और राजकीय सेवा के मध्य से साधना की राह निकली, जो आध्यात्मिक राजमार्ग से जुड़ कर आपको सर्वोच्च सूक्ष्म जगत 'गुरु लोक' तक ले गई। इसके प्रभाव से चिदाकाश में पूरा 'स्प्रिचुअल इंटरनेट' प्रत्यक्ष हो गया। आप सर्व समर्थ संत हो गए।

रसोईघर में नवधा भक्ति

भक्ति के नौ प्रकार माने गए हैं। आप कहते थे कि स्त्री अपने रसोईघर में ही भक्ति की पूर्णता प्राप्त कर सकती है। रसोई में जो कुछ बनता है, वह अपने इष्ट या गुरु के ध्यान में रहते हुए बनाए। फिर उसका भोग लगाए। बस, हो गई भक्ति। उनके ध्यान में चौका धोया तो प्रतिमा प्रक्षालन हो गया.....ध्यान में याद आती रही तो नाम सुमिरन हो गया.....भोग लगाने में पूजा-अर्चन-वंदन व स्वामी-सेवक भाव की भक्ति सम्पन्न हो गई। इस तरह प्रतिदिन दो घंटे की यह "सर्वश्रेष्ठ मानस भक्ति होती रहती है।

फकीर लेता नहीं देता है

आप फरमाते थे कि फकीर किसी से कुछ नहीं लेता है। खिदमत के बदले धाप कर देता है। आपने दौलत और रूहानियत, दोनों धाप कर दी। रोगियों को मौत के मुंह से खींचकर जिंदगी दी। मरणांतक दुर्घटना में सूक्ष्म रूप से पहुंचकर मुरीदों को प्राण दान दिया। यह सब करके भी बोलते कुछ नहीं, मुस्कराते रहते थे। देने का यह क्रम आज भी जारी है।

इतना चैतन्य है आस्ताना

गुरुदेव का आस्ताना रूहानियत का साकार स्वरूप है। किसी को ब्रह्म कमल दिखता है, तो अन्य को कैलाश मानसरोवर के दिव्य दर्शन होते हैं। यहां सूफी और वैष्णव मंत्रों की अनुगंज है। उर्स के दौरान इसी आस्ताने में रुहानी उर्स महोत्सव के दर्शन होते हैं। गुरुदेव कभी समाधि पर व कभी सामने रखे हुए पलंगनुमा असान पर बैठे हुए दिख जाते हैं। यहां आदेश मिलते हैं, निर्देश होते हैं, सलाह मिलती है, फटकार सुनाई देती है एवं दुलार वाली थपकी का अहसास भी होता है। आप में आस्था है तो यहां सब कुछ वास्तव है।

गुरुदेव का त्रियामी मिशन

व्यस्ततम जीवन में आप तीन मिशन लेकर चले थे। अपने पीर बाबा हुजूर की दरगाह का निर्माण कराया। उवैसिया सत्संग आश्रम की स्थापना की और वहां भी रूहानियत को संगमरमर में स्पंदित किया। झांसी में अपने दादा पीर की दरगाह में मरम्मत एवं विस्तारीकरण कराया। दूसरा आश्रम के पास दादा हुजूर की याद में चेरिटेबल अस्पताल शुरू किया। वहां निशुल्क चिकित्सकीय परामर्श एवं लागत मूल्य पर दवा उपलब्ध कराई जाती है। आश्रम में ही पुस्तकालय एवं बाबा बादामशाह शोध संस्थान की स्थापना की। तीसरा मिशन था प्रबुद्ध एवं जिज्ञासु मनष्यों को नाम दीक्षा देकर अध्यात्म की राह पर आगे बढ़ाना। इनमें से कुछ साधकों को आपने ऊपर भी उठाया कि चिदाकाश में ब्रह्मांड का ओर-छोर तक दिख दिया। ये तीन कार्य आज भी स्पष्ट नजर आते हैं।

रुहानियत की खुशबू आज भी

आपने 22 नवंबर 2008 में परदा कर लिया था, किन्तु उनकी दरगाह में रुहानी उपस्थिति का एहसास आज भी है - खुशबू से, हवा में गुनगुनाहट से, झुलसा देने वाली धूप में ठंडे झोंके से, रोशनी में अनूठी दमक से, तथा अचानक ही आपके सामने आ जाने से। ऐसा मुरीदों को उनके घर पर भी अनुभूत होता है। सोफे पर, टीवी के पर्दे पर, कमरे में चलते हुए और थाली में रोटी खाते हुए भी। आप उर्स के दौरान आएंगे तो देखेंगे कि ऐसे महात्मा के आश्रम में खुदाई नूर किस तरह दमकता है।

भौतिक देह में रूहानी पुरुष थे बाबा बादाम शाह

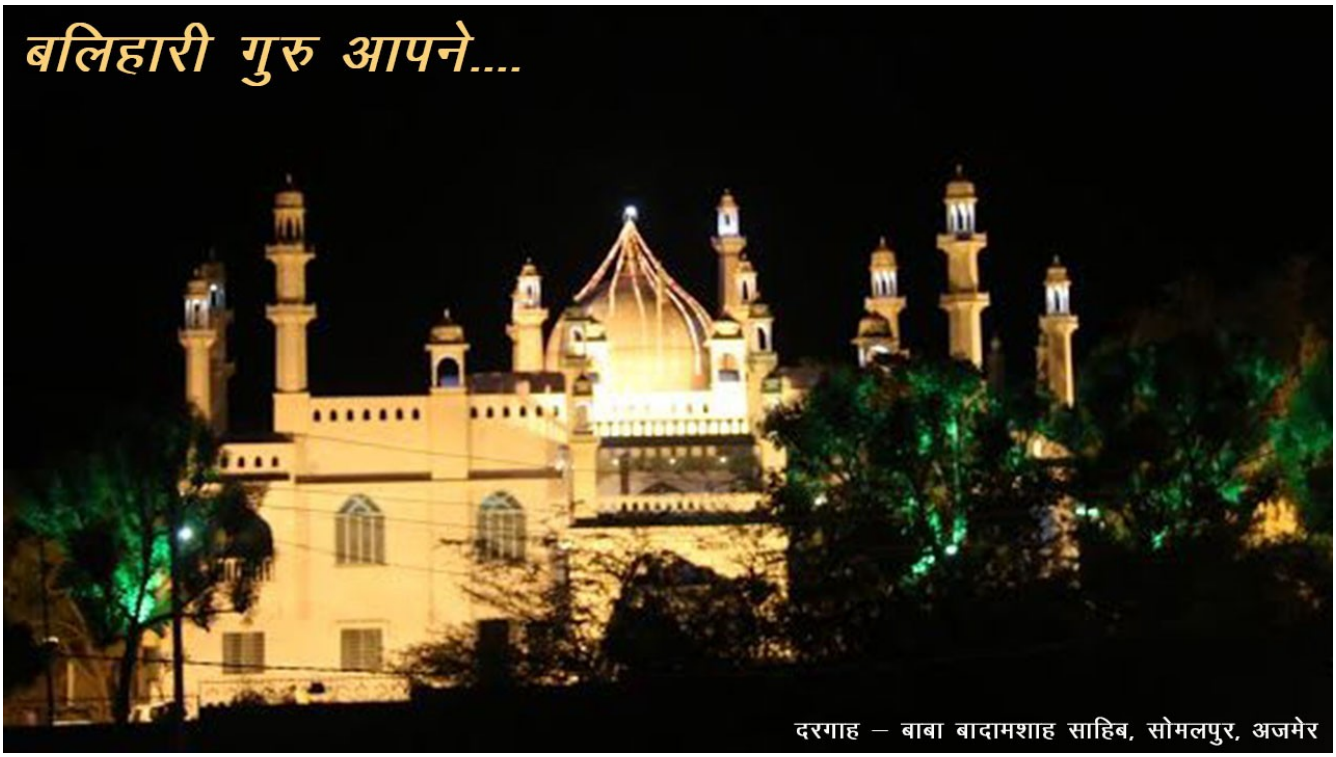

परमहंस अवस्था के महात्मा रूहानी पुरुष कहे जाते हैं। उनकी रूह हर क्षण खुदा के संपर्क में रहती है। बाबा बादामशाह ऐसे ही रूहानी पुरूष थे। अजमेर के सोमलपुर गांव में पहाड़ियों के मध्य इनकी नयनाभिराम दरगाह है। वे सूफी थे - बेमिसाल पीर परस्ती, भोग से विरत, मन साफ, आचरण में सत्यम और नज़र में सब के लिए प्रेम। मेरठ से यहां आए। झांसी के दरवेश हज़रत निजामुल हक से यहीं मुरीदी मिल ली। नाग पहाड़ की एक अधूरी खोह में नौ साल तपस्या की। फलस्वरूप हृदय में फकीरी उतर गई। पीर ने 14 सौ वर्ष की उवैसिया ज्योति आपको थमाते हुए कहा की इसे अजमेर में रोशन करो।

पत्थरों में याददाश्त

वे अपने पीर साहब के साथ जब पहली बार सोमलपुर आए तो एक प्रस्तर शिला पर हाथ रखते हुए पीर साहब बोले कि पत्थरों में भी याददाश्त होती है। ये इस पहाड़ी का सारा इतिहास - हमें लड़ाई का, धर्म का, संत फकीरों की इबादत का और रूहानियत का इतिहास बता रहे हैं। हम यहां कलमा और ओंकार मंत्र सुन रहे हैं। तुम बाद में यह सब सुनोगे। इसीलिए यह जगह हमें पसंद है लेकिन हम झांसी में ही ठीक रहेंगे। यह स्थान तुम आबाद करना। पत्थरों में याददाश्त का सत्य अब पदार्थ विज्ञान भी स्वीकार कर चुका है। नासा के विशेषज्ञों का एक दल कैलाश मानसरोवर में अध्ययन कर रहा है कि वहां वर्तमान चेतना के कारण भगवान महादेव की छवि दिख जाती है और वेद के श्लोक सस्वर सुनाई देते हैं।

रूहानी सभा

गुरुदेव ने बताया कि बाबा साहब के स्थान पर उवैसिया सिलसिले के बुजुर्ग आते थे। रात में कई बार रूहानी सभाएं होती थी। दूसरों को कुछ नहीं दिखता था। उन्होंने ही हुजूर को अपने सिलसिले के गुप्त मंत्र दिए थे। उस वक्त पूरा क्षेत्र दिव्य प्रकाश से दमकता था, लगता था जैसे ऊपर से नूर बरस रहा है। ऐसे ही यहां रूहों का आना-जाना लगा रहता था। वे बड़े अदब से यहां हाजरी देती थीं। यह सच्चाई आज भी कुछ साधकों के गहरे ध्यान में दृश्यमान हो जाती है।

अमृत जल जाता है

हुजूर बताते थे कि प्रत्येक मनुष्य के सहस्त्रार चक्र से रोज अमृत टपकता है लेकिन वह मणिपूर चक्र में जल जाता है। यह नाभी क्षेत्र में होता है। यहां सूर्य की स्थिति है। पीनियल ग्लैंड का रस या अमृत की बूंदें इसी तेज में जल जाती हैं। योग साधना या अन्य विधि से इन बूंदों को मणिपूर चक्र में जाने से रोक देते हैं। फिर स्नायुतंत्र के जरिए शरीर में पहुंचाते रहते हैं। साधकों के लिए बाबा साहब कहते थे कि जीभ को तालु में ठहराते हुए गुरुमंत्र का जाप करना चाहिए। इससे कथित अमृत बूंदों का उपयोग होता रहेगा। पारिभाषिक शब्दों में इसी को खेचरी मुद्रा कहते हैं।

फकीर के अलग अलग वेष

आप बताते थे कि किसी भी वस्तु के कंपन बढ़ा कर, प्रकाश का अवशोषण करने वाला लेप लगा कर या उसके चारों तरफ लोह गर्भ जैसे धातु के आवरण से उसे अदृश्य किया जा सकता है। कई महात्मा इसी कारण दिखते नहीं हैं। ऐसे ही धारणा शक्ति को मजबूत करके कोई सा भी रूप धारण किया जा सकता है। हुजूर ने गुरुदेव के सामने शेर का रूप धारण करते हुए उक्त बात समझाई - जब तक कोई रूप धारण किए रहो तब तक याद रखना पड़ता है कि मैं अमुक रूप में हूं। रामायण कालीन मेघनाथ व महाभारत के घटोत्कच के पास ऐसी विद्या थी। यदि ऐसे मनुष्य के विरूद्ध कोई ध्यान योगी खड़ा है तो रुपधारण का करिश्मा फेल हो जाता है।

आस्ताने में सिमटी दुनियां

वे फरमाते थे कि परमहंस अपनी हथेली पर सारी दुनिया देख सकता है। यहां आज भी बाहर से आने वाले फकीर इस कथन की पुष्टि करते हैं। वे कहते हैं कि जिस शहर में ऐसा स्थान है वहां लोग दुःखी क्यों? नज़र वालों के लिए यहां सब कुछ है। आस्था वालों के लिए बहुत कुछ है। अनास्थावादियों के लिए मात्र पत्थर की दरगाह है। ऐसे कलंदर को शत-शत प्रमाण।

गुरुपूर्णिमा पर अजमेर में एक सूफी कलंदर का उर्स

आषाढ़ माह की पूनम को 15 हजार वर्ष पहले गुरुपूनम के रूप में पहचान मिली। फिर यह व्यास जयंती के तौर पर मनाई जाने लगी। नेपाल में इस दिन को शिक्षक दिवस का दर्जा प्राप्त है। लेकिन इस बार देश में कई जगह गुरुपूनम के अवसर पर एक सूफी कलंदर हज़रत निजामुल हक का सालाना उर्स मनाया जाएगा। इसमें हमारा अजमेर शहर भी शामिल है। ये अजमेर में बाबा बादामशाह के गुरु थे। मुस्लिम कैलेंडर के अनुसार इनके परदा फरमाने का दिन इस बार उपर्युक्त तिथि पर आया है।

15 हजार साल पहले

हिमालय क्षेत्र में एक योगी लगातार 84 वर्ष तक समाधि में स्थिर रहा। सात श्रद्धालु इतने समय उसके पास बैठे रहे। उधर योगी के नेत्र खुले और इधर वे सातों निहाल हो गए। योगी ने उन्हें योग विद्या का ज्ञान कराया। कालांतर में वे सप्त ऋषि कहलाए। शैव मत में उक्त योगी की प्रथम यौगिक शिक्षा दी। वह आषाढ़ की पूर्णिमा का दिन था जिसे उन सात शिष्यों ने पहली बार गुरुपूनम के रूप में मनाया।

झांसी का कलंदर अजमेर में

इधर हम जिन हज़रत के मुक्ति दिवस या उर्स की बात कर रहे हैं वे निजामुल हक हैं। जन्म मेरठ में, गुरु से दीक्षा रामपुर में हुई। समाधि झांसी में, चिल्ला अजमेर के जिलावड़ा गांव में है। अजमेर को आपकी रूहानी सौगात बाबा बादामशाह कलंदर के रूप में मिली। आपने ही अपने शिष्य बादामशाह को सोमलपुर में उस जगह ठिकाना बनाने का आदेश दिया जहां आज उनकी दरगाह है। उन्होंने निकटस्थ जिलावड़ा गांववासियों को आजीवन के लिए एक ही मंत्र देकर धन्य कर दिया। यह रूहानी संसार का अद्वितीय उदाहरण है।

ग्यारह परमहंस तैयार किए

वे ऐसे गुरु थे, जिन्होंने 11 परमहंस परिपक्व किए। ज्ञात इतिहास के अनुसार ऐसा अन्य किसी फकीर ने नहीं किया है। उन्होंने झांसी के बरुआ सागर क्षेत्र को रुहानी तीर्थ स्थल बना दिया।
आज भी वहां पर रात का सन्नाटा दिल दहला देता है। किंतु 140 साल पहले वहीं 11 परमहंस तैयार किए। रात में उनकी हिफाजत फरिश्ते करते थे। आप अजमेर आते रहते थे। यहां अंदरकोट स्थित हकीम साहब की हवेली में ठहरते थे। अपने मुरीद बाबा बादामशाह साहब को आपने अजमेर की जमीन की रुहानी बुलंदी का रहस्य समझाया। द्वापरयुग से ही यहां आध्यात्मिक चेतना प्रवाहमान है।

उवैसिया सिलसिले के एक सिद्ध संत थे हज़रत हर प्रसाद मिश्रा उवैसी

सूफियों में उवैसिया सिलसिला कलंदरी माना जाता है। इसी के एक सिद्ध संत थे अजमेर के हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी। बाबा बादामशाह के ऐसे शिष्य जो अंदर के चिदाकाश से बाहर अनंत आकाश तक फैल गए। बीसियों ऐसे उदाहरण हैं जो प्रमाणित करते हैं कि आकाश उनकी मुट्ठी में था। अतीत में जाकर रामायण महाभारत काल को देखा और भविष्य में प्रवेश करके भारत की भावी गौरव गाथा देखी।

अमृत का घड़ा लिए हुए बैठा हूँ

वे रुहानियत के दूधिया बादल जैसे थे। चुपचाप बरस जाते, करम कर देते, रुहानी लोकों में चढ़ा देते और किसी को खबर तक नहीं लगती थी। प्रत्यक्ष में जरूर कहते थे कि मैं रूहानी अमृत (आध्यात्मिक ज्ञान) का घड़ा लेकर बैठा हुआ हूं, कोई पीने वाला तो आए। जिस किसी ने भी रूहानियत मांगी, उन्होंने उसे आध्यात्म का आरपार दिखा दिया।

पीर तो परम की राह पर चलाता है

वे फरमाते थे कि दीक्षा लेने के बाद भी लोग गुरु से रोटी, कपड़ा, मकान ही मांगते हैं तो समझो कि उनके भोग संस्कार बहुत ही कठोर हैं। सूक्ष्म लोकों से गुरु यहां इसलिए आते हैं कि मनुष्य को परम की राह पर चला दें। उसे गृहस्थ योगी की तरह रहना सिखा दें। वे कहते थे कि भोग में ठहरो मत, उसमें से गुज़र जाओ। सिद्ध नाम ही वह मार्ग है जो ईश्वर के ठिकाने तक ले जाता है। यही दैवीय कवच की तरह रक्षा भी करता है। जिसके पास सिद्ध नाम है उसका दुरात्मा भी कुछ नहीं बिगाड़ पाती है। सूझ लो कि यही योग है, साधना है।

गुरु के भरोसे हो जाओ

यदि तुम जप, तप, साधना आदि कुछ भी नहीं कर सकते हो तो फिर एक काम करो, गुरु के भरोसे हो जाओ। वह तुम्हारी आवश्यकताएं पूरी करेगा और तुम्हें गोविंद से भी मिलवा देगा। भरोसे होने का मतलब है कि तुम पीछे हट जाओ, गुरु को आगे कर दो। अब तुम्हारा कुछ नहीं है। सब कुछ पीर का है। तन एवं मन सब गुरु का। नौकरी भी तुम्हारी नहीं। व्यवसाय भी तुम्हारा नहीं। यह एक भाव है जो प्रबल होने पर तुम्हारे लिए साकार हो जाएगा। जिस ने ऐसा विश्वास किया वह तर गया।

दीक्षा के 108 प्रकार

वे कहते थे कि एक सौ आठ तरह से नाम दीक्षा दी जा सकती है। इनमें सर्वश्रेष्ठ होती है परम सत्ता से सीधी दीक्षा। ब्रह्मर्षि वशिष्ठ इसके उदाहरण हैं। एक अन्य श्रेष्ठ तरीका है - गुरु सैकड़ों

मील दूर से मनुष्य को खींचता है। उसे स्वयं के मानस में गुरु की तस्वीर दिखती है। फिर भी जैसे-तैसे उन तक पहुंच जाता है। आदि शंकराचार्य के साथ ऐसा ही हुआ था। मौखिक या लिखित रूप से नाम देना तो सामान्य दीक्षा है। स्वप्न में, नज़र से, स्पर्श से, संकल्प से आदि अन्य अनेक तरीके हैं। शक्तिपात के साथ दी गई दीक्षा भी उत्तम होती है।

डीएवी स्कूल के छात्र ने रुहानियत में नाम कमाया

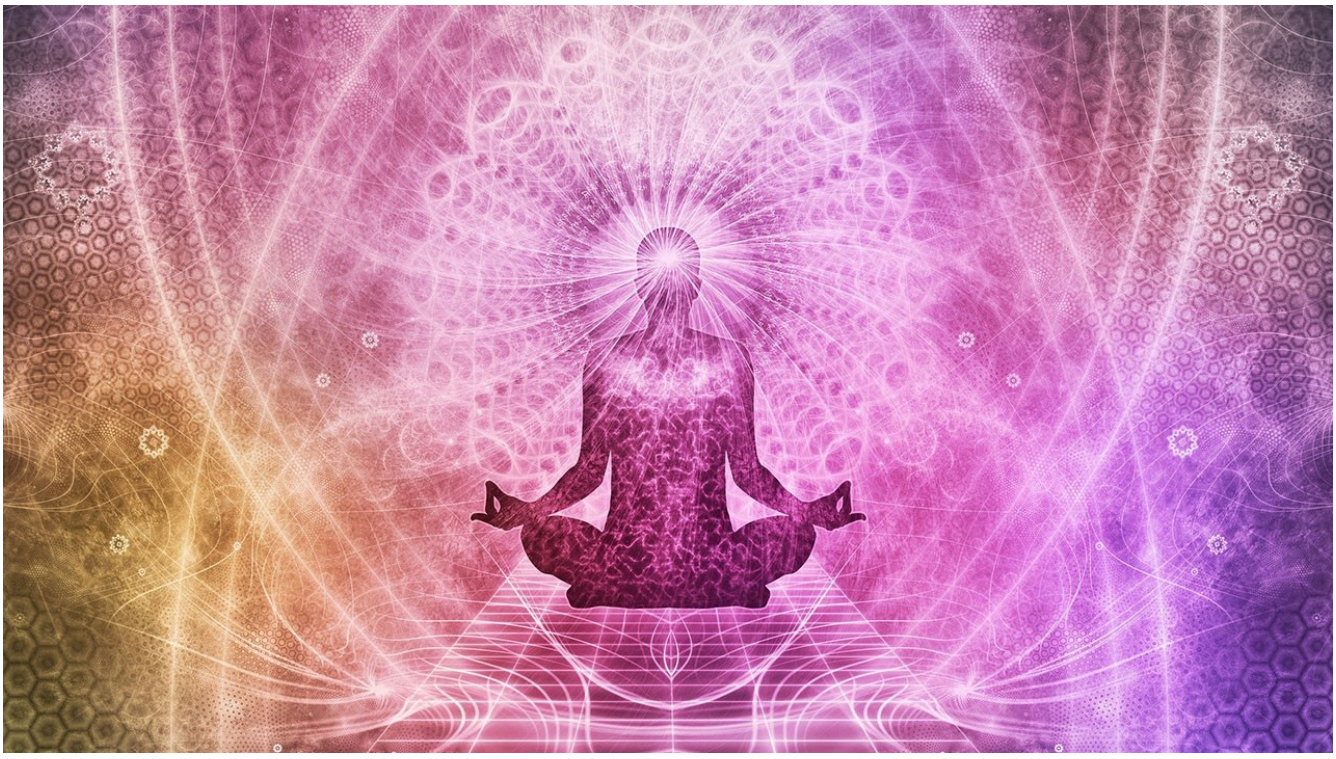

सन 1930-40 के दशक में महेंद्र मिश्रा नाम का एक छात्र डीएवी स्कूल केसरगंज गोल चक्कर में पढ़ता था। आगे चलकर वह कुंडलिनी विशेषज्ञ बना। गुरुदेव हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी के अनुसार महेंद्र मिश्रा एशिया फेम विशेषज्ञ थे। वे दिल्ली में भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी थे। सूट-बूट वाले महात्मा के रूप में विख्यात थे। हज़रत मिश्रा भी इसी विद्यालय में पढ़ते थे।

किसी की भी कुंडलिनी जगा देते थे

इस शक्ति पर उनका नियंत्रण था। वे नज़र से, स्पर्श से व संकल्प से किसी की भी कुंडलिनी को सक्रिय कर सकते थे। उनके अनुसार श्वास की सीधी टक्कर सहस्त्रधारा चक्र पर लगाओ। वहां से टकरा कर सांस मूलाधार तक जाएगा। ऐसा बार बार करने से सुस्त पड़ी हुई प्राण शक्ति जाग्रत

हो कर चक्रों का भेदन करने लगती है। मूलाधार से श्वास खींच कर आज्ञा चक्र पर टकराने से भी उक्त कार्य संभव है।

अंगुलियों से करंट निकलता था

उनके चक्र जाग्रत थे। ऊर्जा सहस्त्रधारा चक्र से चार अंगुल ऊपर गोल घेरे में तरंगित रहती थी। कई बार उनकी अंगुलियों से करंट निकलता था। खुलासा तब हुआ जब ऑफिस में एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी ने ऐसी शिकायत की। तब हज़रत मिश्रा के माध्यम से वे बाबा बादामशाह की शरण में आए। बाबा साहब ने उक्त दिक्कत दूर की।

सुदर्शन चक्र

वे क्रिया योग टाइम मशीन की तरह अतीत आगत को देख सकते थे। उनके अनुसार श्रीकृष्ण का सुदर्शन चक्र उनकी ही परम शक्ति का दृश्य रूप था। संकल्प शक्ति से स्थूल आकार ले कर कोई भी कार्य कर सकता था। शत्रु को मारना, अंधेरे को हटाना, राह की बाधा को दूर कर देना, पर्वत को भी चकनाचूर कर देना आदि। इसका आधार कोई परामंत्र था, जिसे दुर्वासा ऋषि भी जानते थे, लेकिन इसका प्रयोग उनके सामर्थ्य में नहीं था।

साधकों पर कृपा

वे अक्सर अजमेर आते रहते थे। यहां हज़रत हरप्रसाद मिश्रा के पास ठहरते थे। उन दिनों विनोद मिश्रा, तेजपाल सिंह चौहान व अन्य साधक वहां जाया करते थे। महेंद्र बाबा उनका ध्यान आज्ञा चक्र पर चढ़ा देते थे। दो-ढाई घंटों तक इन साधकों का ध्यान नहीं टूटता था। विनोद मिश्रा ने बताया कि पूरा जोर लगा कर भी साधकगण हाथ की उंगली तक नहीं हिला सकते थे। वह अतिचेतन अवस्था होती थी।

नाम का जाप जीभ से मत करो

वे कहते थे कि गुरु द्वारा मिले नाम का जाप जीभ से मत करो, कंठ से भी मत जपो, नाम की धुन स्वयं के अंदर सुनो, वाद्य संगीत में जैसे गाने की धुन होती है, वैसे ही नाम की धुन भीतर गूंजती है। उसे सुनने का अभ्यास करना पड़ता है। ऐसे ही आप फरमाते थे कि नाम को श्वास से जोड़े बिना रुहानी यात्रा शुरु ही नहीं होती है। मनुष्य के भीतर श्वास धड़कता है, नाम की धुन गूंजती है। दोनों को मिला दो। फलस्वरूप मन इसी धुन पर टिक जाता है। यही धुन बाद में ब्रह्मांडीय धुन से जुड़ जाती है। तब साधक ब्रह्मा अवस्था में पहुंच जाता है। यही नादयोग द्वारा शब्द ब्रह्म की सिद्धि है।

उड़द की दाल और मिस्सी रोटी

रामगंज निवासी तेजपाल सिंह चौहान पर भी उनकी कृपा थी। इनकी पूजा वाली ताक में महेंद्र बाबा की छवि भी विराजमान है। उन्होंने बताया कि एक गुरुवार को उन्होंने उड़द की दाल व मिस्सी रोटी बाबा को पेश की। फिर जब वे अजमेर आए तो आश्रम में बोले कि 'तेजपाल तेरी दाल तो बड़ी स्वादिष्ट थी'। जिनका आज्ञा चक्र खुल जाता है, उन्हें सबकुछ दिखता है। राधास्वामी सत्संग के अनेक साधक ऐसा अनुभव करते हैं पर बोलते नहीं हैं। ऐसे लोग अजमेर में भी हैं।

गुरु यानी बोध शक्ति

उनके मुताबिक परमात्मा एक तरह की चरम चेतना है, अनादि व अनंत। उसका बोध कराने वाली शक्ति या ऊर्जा का नाम गुरु है। यह भी निरंतर प्रवाहमान रहती है। देहधारी गुरु उस गोमुख के समान होता है, इसके मुंह से ऐसी बोध शक्ति की गंगोत्री बहती रहती है। अब आप लोग उसमें डुबकी लगाते हो या किनारों पर खड़े हुए उसे देखते रहते हो अथवा अखबार में उसकी खबर पढ़कर उस पेपर को रद्दी में फेंक देते हो, यह आपके स्वभाव के अनुसार होता है।

हम तेरे आंगन के दीए हैं, हमें आंधियों से बचाना

हज़रत के मुरीदों में उनके चर्चे ही चर्चे हैं - किसी को दौलत दी, किसी को रूहानियत बख्शी। कहीं व्यापार चल पड़ा तो किसी के घर नौकरी ने दस्तक दी। कहीं मेहंदी रच गई तो किसी का सुहाग बच गया। घर-घर में उनके करिश्मों की ऐसी कहानियां हैं। इसलिए यह प्रार्थना है हमें आंधियों से बचाना।

मरेगी नहीं, बच जाएगी

यह टूटती सांसों की कहानी है। छूट-छूट कर वापस आती ज़िंदगी की सच्चाई है। एक जवान विवाहिता। देह में कहीं कुछ खराबी हो गई। ब्लीडिंग रुके ही नहीं। खून जितना चढ़ाओ उतना ही वापस निकल जाए। डॉक्टर ने भी अघोषित तौर पर हाथ खड़े कर दिए। घरवाले हताश हो गए। हम गुरुदेव से प्रार्थना किए जा रहे थे। उन्होंने पहले ही कह दिया था कि मरेगी नहीं बच

जाएगी। फिर भी मन में संशय आ ही गया कि मर गई तो? तब चमत्कार हो गया। अस्पताल में एक लेडी डॉक्टर आई। उसने ब्लीडिंग वाली जगह पर कॉटन ठूस दिया। बस, हो गया काम। जान बच गई। वह डॉक्टर वापस नहीं आई। कौन थी? कैसे आई? यह अचरज शेष रह गया। श्रेय उस महिला चिकित्सक को मिला किंतु मै जानता हूं कि कृपा गुरुदेव की हुई।

श्री श्री शारदा मां की कृपा!

एक युवा साधक की बात है। वह श्री रामकृष्ण परमहंस के प्रति समर्पित है। नाम दीक्षा नहीं हुई। बस मन उनसे लग गया। नाद भी कभी गूंज जाता था। किंतु कसक तो दीक्षा की थी। अब यह काम कैसे संभव हो? लेकिन पढ़ रखा था कि महात्मागण देह त्याग देने के बाद भी दीक्षा देते हैं। किंतु कैसे? किसी के जरिए मेरे पास आया। बोला कि आपके गुरुदेव मदद कर सकते हैं क्या? हमने उसे दो-चार दिन बाद आने के लिए कह दिया। फिर गुरु जी से अरदास की। आपने कहा कि उसे मंगलवार के मंगलवार ठाकुर के आश्रम जाने के लिए कहो। उसे यह बात समझा दी। मालिक का करम। मां शारदा देवी ने कृपा की। वह आश्रम के ठाकुरद्वारे में ध्यानमग्न बैठा था। तभी शारदा माता ने उसके माथे पर अपने दाहिने पैर का अंगूठा लगाया। एक सौ आठ तरह से दी जाने वाली दीक्षाओं में यह भी एक प्रणाली है। साधक को रोमांच हआ। आंखों से आंसू टपक गए। दीक्षा हो गई। हमारे हज़रत ने इस तरह एक भटकते हुए साधक को किनारे लगा दिया।

मां की बात

गुरुदेव ने माता शारदा देवी के विषय में एक विशेष बात बताई - ठाकुर के देह त्यागने के बाद की घटना है। माता कुछ साधकों के साथ तीर्थाटन के लिए निकली थीं। वे वृंदावन भी गईं। वहां उन्हें निर्विकल्प समाधि लग गई। राधा-कृष्ण के दर्शन हुए। उसके बाद वे स्वयं भी गुरु पद की अधिकारिणी हो गईं। उन्होंने दैवीरूप से एक बंगाली नाटककार को स्वप्न में दीक्षा दी। चुपचाप। कई वर्ष बाद जब वह ठाकुर के आश्रम आया तो शारदा देवी को देख कर चौंक गया।

उसने माता के चरण पकड़ते हुए सारी बात बता दी। उन्हीं माता ने उक्त युवा साधक को हमारे गुरुदेव के माध्यम से रुहानी दीक्षा दी।

पंद्रह दिन और रुको

एक लड़की 28 साल की हो गई। शादी नहीं हो रही थी। खुद ही में खोई-खोई सी, हरदम रोई-रोई सी। बड़ी मुश्किल से कोई प्रस्ताव मिला लेकिन लड़का पसंद नहीं आया। वह रोने लगी। कोई ऑप्शन नहीं है, क्या करूँ? लेकिन बेमन की शादी को निभाऊंगी कैसे ? आस्ताने में खूब रोई। आवाज आई - अभी 15 दिन ठहरो। 10 वें दिन ही बढ़िया प्रस्ताव मिल गया। शादी हो गई। बेटा हो गया। वह आस्ताने में आई और खुशी के आंसू छलकाते हए गुनगुनाने लगी - हम तेरे आंगन के दीए हैं, हमें आंधियों से बचाते रहना। ऐसे दयाल को प्रणाम।

वह आदमी की तरह रहता था, बात खुदा की कहता था।
यों ही आता जाता था, लेकिन उसमें विधाता था।

विनोबा ने दरगाह बाजार में रामधुनी गाई तो - इधर का राम, उधर का रहीम हो गया, उधर का रहीम इधर का राम हो गया

पदार्थ भौतिकी वैज्ञानिक अमित गोस्वामी के अनुसार राम सार्वभौमिक चेतना है, एक व्यक्ति नहीं। यही ब्रह्मांड का मूल है। इसी राम के लिए गोस्वामी तुलसीदास ने लिखा - कलि नाम कल्पतरू राम को। पहला कथन पराभौतिकी विज्ञान का है। दूसरी बात भक्ति की है। इसी भक्तिमय राम नाम का रस अजमेर में रामनवमी के दौरान लगातार नौ दिन बरसता था।

राम नाम के तीन दशक का सत्य

लाखन कोठरी में गणेश का मंदिर है। आज तो यह देवालय अपना पुराना आध्यात्मिक वैभव खो चुका है लेकिन छठे, सातवें एवं आठवें दशक के दौरान यहां रामनवमी के पूरे नौ दिन महामंत्र

का अखंड जाप होता था। महामंत्र है - हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे।। परमभक्त चैतन्य महाप्रभु ने इसे महामंत्र कहा। मुक्तिदायी बताया। उस जाप में सूरतराम के चौक से लेकर कुम्हार मोहल्ले तक और धानमंडी से मदारगेट तक के श्रद्धालु आते थे। भक्ति में डूबते थे। रसपान करते थे। उन दिनों पूरी लाखन कोठरी भक्तिमय हो जाती थी। न ढोलक, न माइक। केवल मंजीरे बजते थे। दोपहर में चार घंटे महिलाएं जप करती थीं। रातभर पच्चीस-पचास स्त्री-पुरुष भक्तिमग्न रहते थे। हर घर में एक व्यक्ति अवश्य सहभागी होता था।

राम हनुमान साकार हो जाते थे

उक्त जपयज्ञ में अग्रणी लक्ष्मी प्रेस वाले रामजी, बिरदीचंद, छोटेलाल, गोपाल आदि से मैं सुनता था कि महामंत्र के जाप के प्रभाव से भगवान राम व भक्त हनुमान साकार रूप में कौंध जाते थे। ब्रह्ममुहूर्त में भक्तगण लगभग बेखुदी की अवस्था में खो जाते थे। एकदम तन्मय, जय-जय, रसमय। सुखमय, अभय, अ-दुखमय। देहबोध से परे, हरे-हरे। भावमग्न कुछ भक्त तो आठ-आठ घंटे लगातार जप करते रहते थे। एक बार रामनवमी के दौरान ही विनोबा भावे अजमेर आए। उन्होंने दरगाह बाजार में इसी महामंत्र का जाप किया। हजारों लोग सड़क पर ही बैठ गए। पांच घंटे तक रामधुन गूंजती रही। कौन हिंदु, कौन मुसलमान, कौन सिक्ख, कौन ईसाई। सारा भेद मिट गया। इधर का राम, उधर का रहीम हो गया। उधर का रहीम इधर का राम हो गया। वाहे गुरु का सतनाम, राम राम हो गया। विनोबा ने उस दिन अजमेर को धन्य कर दिया।

फिर मानस मंडल

लाखन कोठरी से रामधुन पट्टीकटला आ गई। आठवें नवें दशक के दौरान यहां की हवा में राम नाम धड़कता था। नियमित कथा एवं श्रद्धालुओं की आस्था ने इस क्षेत्र का नाम बढ़ा दिया था। यहां भी रामनवमी के दौरान रामचरितमानस का अखंड पाठ होता था। एक सौ आठ आसन लगते थे। राम नाम मानो हिलोरें लेता था। इसी प्रकार बजरंग चौराहे पर सीताराम जी का मंदिर है। यहां किसी समय लोगों ने 'सिया राम मय सब जग जानि' उक्ति को साकार देखा है।

प्रतिदिन संध्याकाल में भजन का माधुर्य और रामनवमी के अवसर पर रामचेतना का स्पंदन। भीतर-बाहर, आगे-पीछे बस राम ही राम। लगता था कि जैसे कोई दुलार रहा है। पुचकार रहा है। आज तो वे यादें सिसकती हैं।

याद आते हैं मूलशंकर झा

अनूठे रामभक्त थे ये झा साहेब। रामगंज में रहते थे। रामनाम की ऐसी धुन लगी कि राम से संबंधित आठ सौ ग्रंथों का संग्रह कर लिया। अलग-अलग भाषाओं में रचित व अनूदित रामायण का अमूल्य संग्रह। इसी शहर में ऐसा अद्भुत राम प्रसंग संग्रहालय है। रामकथा पर शोध की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण। जैसे इंडोनेशियाई रामायण में उल्लेख है कि राम सर्वोपरि कूटनीतिज्ञ थे। रशियन रामायण बताती है कि रामवनवास स्वयं उनकी ही योजना थी। अध्यात्म रामायण में वर्णन है कि सीता ने अहिरावण को मारा। इस महामंत्र के जाप के असर से देह के भीतर वाले सूक्ष्म चक्र खुलने लगते हैं। जैसे 'र' एवं 'म' से स्वाधिष्ठानचक्र सक्रिय होता है। ऐसे ही 'ह' से आज्ञाचक्र में स्फुरण होता है। 'आ' विशुद्धिचक्र को एक्टिवेट करता है। मतलब यह कि योग साधना वाला असर इस मंत्रजाप की भक्ति साधना से भी संभव हो जाता है। अखंडजाप में जब इसकी लय बन जाती है तब आनंद की तरंगों का वाइब्रेशन बढ़ जाता है। परिणामस्वरूप भक्त झूमने लगते हैं।

नगर में अयोध्या

लगभग तीस साल पहले दौलतबाग में रामसुखदास जी ने रामकथा की थी। तब उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व से दौलतबाग अयोध्यापुरी जैसा हो गया था। ऐसे ही बीस वर्ष पहले पटेल मैदान में मोरारी बापू ने श्रीराम कथा का अमृत पान कराया था। तब उक्त मैदान भी साकेत जैसा हो गया था। अंततः 'राम सो बड़ो है कौन, मो सो कौन छोटो। राम सो खरो है कौन, मो सो कौन खोटो।

यहां सिर नहीं, दिल सजदा करता है

अजमेर के सूफी संत रामदत्त मिश्रा उवैसी का उर्स डूमाड़ा रोड स्थित उवैसिया रूहानी सत्संग आश्रम में धूमधाम से मनाया जाता है। मिश्रा का जन्म इसी शहर के रामगंज में हुआ। डीएवी कॉलेज में पढ़ाई पूरी हुई और यहीं उवैसिया रूहानी सत्संग आश्रम में वे सूफी संत हो गए। यहीं उनकी दरगाह है। अध्यात्म के साथ सामाजिक सरोकार को आपने बढ़ावा दिया। जनकल्याण का पोषण किया।

कठोर साधना की

मात्र 15 वर्ष की उम्र में आध्यात्मिक साधना शुरु की। चांद त्राटक जैसा कठिन अभ्यास किया। मंत्र सिद्ध किए। पढ़ाई के साथ रूहानी अभ्यास भी चलता रहा था। आपके पिता स्वयं सूफी संत थे - हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी। उनकी कृपा तले बीस वर्ष तक अडिग परिश्रम किया।

फलस्वरूप तंत्र, मंत्र, ध्यान साधना में परिपक्व हो गए। सन 2009 में गुरुदेव हरप्रसाद मिश्रा उवैसी ने पर्दा फरमाया तब रामदत्त मिश्रा गद्दीनशीन हुए।

शक्तिपीठ जैसा प्रभाव

आपके पास अकथ तंत्र सिद्धियां थी। कैसी प्रेत बाधा हो वह ठीक कर देते थे। भटकती हुई रूहें याचना करती थीं कि हमारा उद्धार करो और आप उक्त उपाय करते थे। आश्रम में बैठे-बैठे सोमलपुर की बाबा बादामशाह की दरगाह में ठहरे हुए पीड़ितों का इलाज कर देते थे। गुरुवार के दिन आपके दरबार में शक्तिपीठ जैसा माहौल रहता था।

मन को साधने वाला ही साधक

आप कर्मयोगी थे। कहते थे कि कर्म ही जीवन की गति है। कर्म ही नियति है। कर्म ही मुक्ति है। इसलिए कर्म करो। गुरु को साक्षी मानते हुए कर्म करोगे तो भटकोगे नहीं। गुरु की कृपा ही देह को स्वस्थ रखती है। गुरु के अनुग्रह से ही बुद्धि सम एवं चित्त स्थिर रहता है। इस अवस्था में की गई साधना सफल रहती है। आप प्रतिदिन सत्संग करते थे। समझाते थे कि हमेशा ईश्वर के ध्यान में रहे वह संत होता है, जो संत में रहे वही उसका शिष्य होता है। जो मनुष्य मन को साध ले वही साधक होता है। जो विधि मन को साधने का अभ्यास कराती है उसे साधना कहा जाता है। गुरु का दिया नाम भी मन को अनुशासित करता है। आपने आश्रम में कारसेवा प्रारंभ की। गुरुदेव द्वारा आरंभ किए हुए ध्यान शिविर एवं चिकित्सा सेवाकर्म को आगे बढ़ाया। ऐसी ढेर सारी बाते हैं, यादें हैं। यहां सिर नहीं दिल सजदा करता है। हर आंख में उनका अंदाज कौंधता है। हवा उनके किस्से सुनाती है। बगीचा उनकी बातें करता है। परिसर का ज़र्रा-ज़र्रा राम-राम करता है।

शोध संस्थान की किताबों में रूहानियत की खुशबू

बाबा बादामशाह आध्यात्मिक शोध संस्थान का दस फरवरी को स्थापना दिवस है। अदभुत है यह शोध संस्थान। यहां रुहानियत बोलती है। गुरु चेतना यहां स्पंदन करती है। धर्म एवं दर्शन यहां सांस लेते हैं। गुरुदेव की पसंदीदा पुस्तकें बुलाती हैं कि पढ़ो। यह संस्थान उवैसिया रुहानी सत्संग आश्रम में स्थित है। ट्रस्ट के अध्यक्ष गुरुदत्त मिश्रा इस के प्रभारी हैं।

यहां वेद, उपनिषद, पुराण, कुरान, बाइबल, गीता, संत-साहित्य आदि सर्वधर्म सम्मेलन पंथ से संबंधित डेढ़ सौ से अधिक पुस्तकें हैं। गुरुदत्त मिश्रा बताते हैं कि यह सब उनके पिता सूफी संत हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी के एकल प्रयास का परिणाम है। विगत 15 वर्ष के दौरान इस संस्थान ने लगभग 50 ग्रंथ व किताबें प्रकाशित की हैं। देह से अदेह, कुंडलिनी शक्ति,

कर्मण्येवाधिकारस्ते आदि। गुरुदेव की लिखी हुई अनेक डायरियां अभी रखी हुई हैं जिनसे 10 और पुस्तकें तैयार की जा सकती हैं।

दुर्लभ ग्रंथ भी उपलब्ध

संत दुर्लभ और उनके पुस्तकालय में ग्रंथ भी दुर्लभ। आत्मा का प्रकाश, चरक संहिता, धवला, चंद्रकांता संतति के सारे खंड, चारु चंद्र लेख, गीता पर लाहिड़ी महाशय की टीम (चार भाग), कल्याण के अनेक विशेषांक (50 वर्ष पुराने) तथा वाल्मीकि की कई उत्तम किताबें। यहां गुरुदेव के समय का दौर भी अनुपम था। अध्ययन का, सत्संग का, शंका समाधान का एवं पढ़े हुए के चिंतन मनन का।

यहां आते रहे प्रख्यात प्रबुद्धजन

इस लंबी अवधि के दौरान अनेक ख्यात-प्रख्यात लोग यहां आते रहे हैं। पूर्व महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री अनिता भदेल, मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष, साहित्यकार नरेंद्र कोहली, आरपीएससी के सचिव हेमंत शेष, अशोक आत्रेय सहित कई प्रमुख लोग आते रहे हैं।

हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी, जिन्होंने बताया कि नाम को स्वयं के भीतर सुनने का अभ्यास करो

अजमेर के सूफी संत हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी एक आध्यात्मिक मिशन लेकर चले थे। उन्होंने लगभग दो सौ परिवारों को नाम दीक्षा दी थी। आश्रम में वे नियमित सत्संग करते थे। नाम-ध्यान के विषय में समझाते रहते थे। इस विषय में उनके विचारों का सार यहां प्रस्तुत है।

सांसारिक जीवन में परिवार से लेकर राष्ट्र तक प्रबंधन जरूरी है। ऐसे ही अध्यात्म में श्वास का प्रबंधन आवश्यक है। गुरु जो नाम देता है, उसे अपनी श्वास-प्रश्वास से जोड़ना ही सांस का प्रबंधन कहा जाता है। सांस अलग, नाम अलग तो हजार साल तक ऐसा करते रहो, उपयुक्त फल नहीं मिलेगा। गुरु से नाम लेने का उद्देश्य है, अंतःकरण को शुद्ध करते हुए मुक्ति तक पहुंचाना। यह तभी होता है जब नाम सांस के साथ चलने लगे। इसके फलस्वरूप एक निश्चित

आवृत्ति के बाद नाम खुलेगा। राम का नाम खुलते ही राम के प्रत्यक्ष दर्शन होंगे। गुरु-नाम खुलते ही गुरु के नूरानी दर्शन होंगे। इसके बाद ही मोक्षदायी आध्यात्मिक यात्रा शुरू होगी। हज़रत हरप्रसाद मिश्रा ने अनेक स्त्री-पुरुषों को नाम दीक्षा दी थी। दीक्षा के वक्त वे यह बात समझाते थे। वे अपनी सूक्ष्म दृष्टि से नाम लेने वाले का मूल्यांकन कर लेते थे। उसके संचित संस्कारों के अनुसार ही उसे उपयुक्त मंत्र या नाम देकर उसकी आवृत्तियां समझाते थे। सांसारिक लाभ चाहने वाले एवं रुहानी चढ़ाई के आकांक्षी को देख कर बताते थे कि किस नाम के कितने जाप रोज करने हैं। सामान्यतः एक माला रोज, मध्यम स्तर पर इक्कीस माला प्रतिदिन, अधिकतम की कोई सीमा नहीं। उनके लिए आदेश होता था कि नाम को सांस के साथ जोड़ लें।

ज्योति कण में विद्यमान रहती है गुरु चेतना

गुरुदेव मिश्रा जी एक बात पर अधिक जोर देते थे कि नाम को स्वयं के भीतर सुनने का अभ्यास करो। जब आज्ञाचक्र व सहस्त्रार पर नाम धड़कता है तो वही सुनाई भी देता है। ऐसा अभ्यास सामान्य मनुष्य भी कर सकता है। श्वास सुनाई देती है, नाम सुनाई देता है। नाभी पर, दोनों वक्ष पर, आज्ञाचक्र एवं कपाल क्षेत्र में एक साथ नाम धड़कता है। ऐसा लगता है मानो गुरुदेव आगे-आगे चल रहे हैं। आपको रुहानी मार्ग दिखाते जा रहे हैं। ऐसा भीतर के चिदाकाश में अनुभव होता है। हमारे अंतःकरण में जो अणुरूप चित्त है, वही फैल कर आकाश जैसा हो जाता है। इसी को चिदाकाश कहते हैं। यह आज्ञाचक्र पर दिखता है। इसी के साथ सूक्ष्म गुरु की सूक्ष्म वाणी या परावाणी भी सुनाई देने लगती है। वे आपको अध्यात्म के गोपनीय रहस्य समझाते जाते हैं। सूक्ष्म लोकों के दिव्य दृश्य दिखने लगते हैं। ये इतने भव्य होते हैं कि साधक का मन उनमें ही डूबा रहता है। वह सांसारिक खूबसूरती से विरत हो जाता है। जैसे बीज के खोल में वृक्ष का वैभव सूक्ष्म रूपेण निहित होता है वैसे ही गुरु नाम में स्वयं गुरुचेतना ज्योतिकण रूप से विद्यमान रहती है। बीज को उर्वर जमीन मिलते ही वह अंकुरित हो जाता है। ऐसे ही लेंथ एवं फ्रीक्वेंसी के अनुसार नाम का जाप करने से वह खुलता है या कहें कि उसमें निहित चेतन ऊर्जा अंकुरित हो जाती है। पानी के किनारे ऐसे सिद्धि शीघ्र होती है। घर में आप जल से भरा हुआ गिलास अपने पास रख सकते हैं। किसी भी देवस्थान पर जाप करने से भी ऐसा ही फल मिलता है। इसका

कारण गुरुजी ने यह बताया कि इन जगहों पर ब्रह्मांडीय ऊर्जा अधिक संघनित रहती है। ब्रह्मांड में इसका द्रव्यमान 74 प्रतिशत बताया जाता है। इसे संजीवनी ऊर्जा, प्राण ऊर्जा व गुप्त ऊर्जा भी कहते हैं। इसे आज्ञाचक्र पर ग्रहण किया जाता है। ब्रह्ममुहूर्त इसके लिए श्रेष्ठ समय है।

सोमलता भी प्राण ऊर्जा से भरपूर

संजीवनी बूटी नामक पौधे में यह ऊर्जा अधिक संचय करने की क्षमता होती है। ऐसे ही अमरफल उक्त शक्ति से भरा हुआ रहता है। इसके सेवन से मनुष्य को दीर्ध जीवन मिलता था। गुरुदेव बताते थे कि अजमेर के नागपहाड़ में भी संजीवनी ऊर्जा की अल्प मात्रा वाले पौधे होते थे। इनकी दो पत्तियां खा लेने से एक सप्ताह तक भूख नहीं लगती थी। औषध बनस्पतियों में ऐसी ऊर्जा की न्यूनाधिक मात्रा होती है। सोमलता भी प्राण ऊर्जा से भरपूर मानी गई है। इसका रस गुरुपूनम के अवसर पर शिष्यों को पिलाया जाता था। परिणामस्वरूप उनके मस्तिष्क की सुप्त स्नायु कोशिकाएं भी सक्रिय होने लगती थीं। सोमलता के पत्तों को पीस कर सोमरस बनाया जाता था। वह चावल के मांड जैसा भूरे रंग का तथा स्वाद में थोड़ा खट्टा होता था। इसलिए शहद मिला कर दिया जाता था। महात्मा जी यह कहते थे कि ब्रह्मांडीय ऊर्जा ही गुरु द्वारा शक्तिपात के जरिए चहेते योग्य मुरीद में प्रविष्ट की जाती है। ऐसा मुरीद सरलता से आज्ञाचक्र पर ठहर जाता है। जैसे आकाश से तड़ितपात वैसे ही गुरु के द्वारा शक्तिपात। एक ही क्षण में कुंडलिनी की प्राण ऊर्जा आज्ञाचक्र पर चमक जाती है। उसे गुरु के नूरानी दर्शन होने लगते हैं। वह हर पल गुरु के आध्यात्मिक संरक्षण में रहता है। पीर न तो उसका अनिष्ट होने देता है और न ही उसे भटकने देता है। जिन्हें इसी जीवन में सिद्ध महात्मा होना होता है उन पर रूहानियत से सीधा ही शक्तिपात होता है। महात्मा अष्टावक्र, शुकदेव जी आदि ऐसे ही दृष्टांत हैं। शक्तिपात की ऊर्जा से साधक के संचित संस्कार स्वतः ही कटते जाते हैं। भीतर चक्र खुलने की अनुभूति होती रहती है। भूख एवं नींद पर नियंत्रण हो जाता है। एक तरह की बेखुदी छाई रहती है। यदि ये अपने पथ पर संयत रहे तो एक ही जीवन में पूर्णता तक पहुंच सकते हैं। यह बहुत कठिन है - रुहानी धन से भी अपरिपक्व साधकों में अहंकार आ ही जाता है। इस तरह गुरु से मिलने की, नाम दीक्षा लेने की, मानव जीवन प्राप्त करने के उद्देश्य एवं स्वयं सिद्ध होने की सार्थकता

वाले साधना मार्ग में नाम का बहुत महत्व है। नाम को फलित करने के लिए उसे श्वास से जोड़ना जरूरी है। ऐसा या तो गुरु कृपा से होता है अथवा ब्रह्मांडीय ऊर्जा के संचय से संभव होता है। जब ऐसा होता है तब मनुष्य को स्वतः ही पता चल जाता है। यदि पूरा गुरु मिल जाए तो आप बड़भागी हैं। जो लोग हज़रत हरप्रसाद मिश्रा उवैसी के मुरीद हैं वे भी इसी श्रेणी में शामिल हैं।

वे बताते थे

एक मनुष्य सामान्यतः प्रतिदिन 21600 श्वास लेता है। जब गुरु नाम सांस के साथ जुड़ जाता है तो इतने जाप रोज हो ही जाते हैं। इस तरह एक वर्ष में 7884000 जाप पूरे होते हैं। जो लोग श्वास-प्रश्वास में दो नाम लेते हैं उनके जाप इसी अवधि में दोगुना हो जाते हैं। नाम ललाट के मध्य बिन्दु पर धड़कने लगता है। इससे भी आगे सहस्त्रार चक्र तक नाम का स्पंदन फैल जाता है। कपाल के नीचे है सहस्त्रार चक्र। यहां प्रकाश जगमगाने लगता है। लगभग तीन साल में नाम खुल जाता है। देहधारी गुरु का नूरानी रूप सामने आ जाता है। यह दर्शन आज्ञाचक्र पर होते हैं।

नाम की चादर ओढ़ो, गुरु तुम्हारा सारथी बन जाएगा

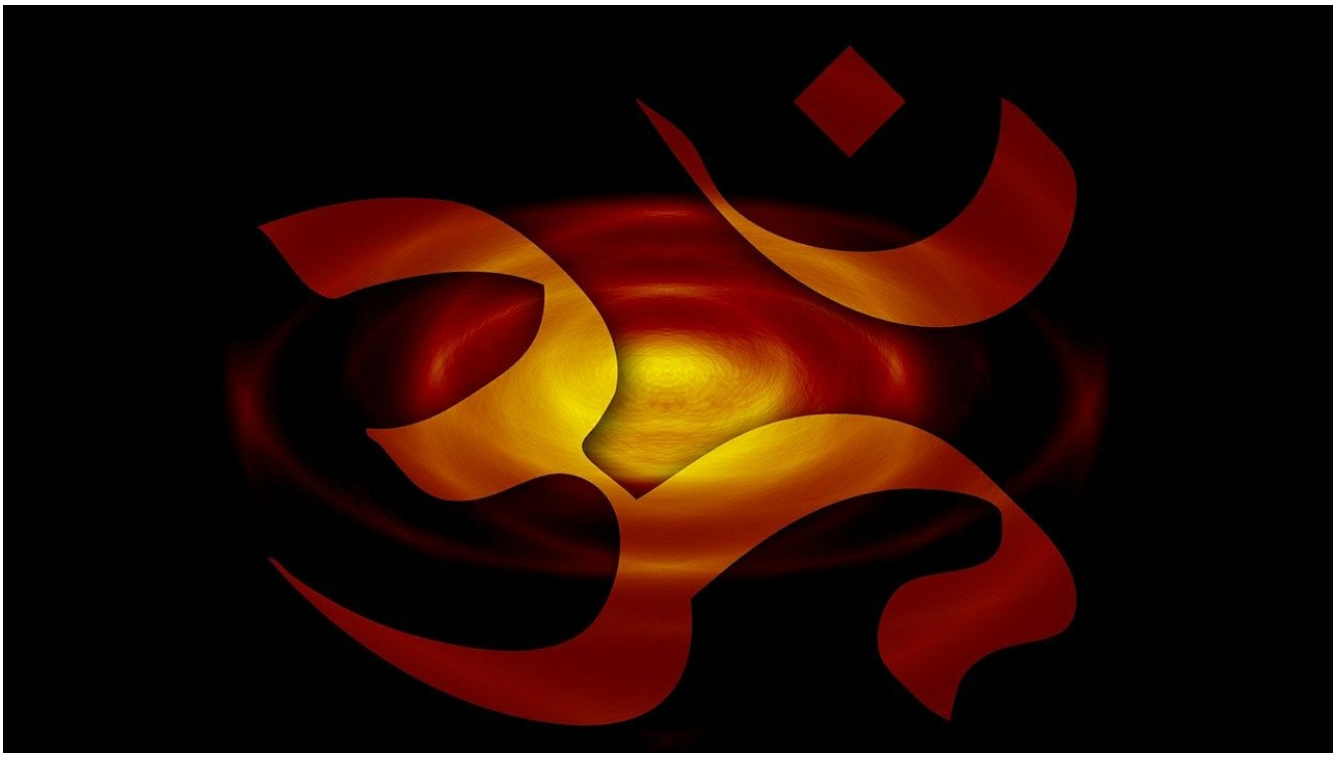

अजमेर के सूफी संत हज़रत रामदत्त मिश्रा का पूरा जीवन रूहानी उत्सव था। वे ऐसे थे - जैसे कोई नूरानी बादल, जैसे फूलों की घाटी में कल-कल करते झरनों का संगीत, जैसे किसी तपोवन में 'गुरु ओम तत् सत्' की अनुगूंज। मुरीदों के लिए इनकी यादें हवा में खुशबू और धूप के उजाले जैसी हैं जो सब जगह उनके साथ हैं। ब्यावर रोड स्थित उवैसिया रूहानी सत्संग आश्रम में आपकी दरगाह है।

पीर तो मुरीद को पार लगाता है

वे कहते थे कि पीर वह, जो अपने मुरीद को पार लगा दे। साथ ही मुरीद में भी पार उतर जाने की कसक होनी चाहिए। मतलब यह कि मुरीद 'नाच्यो बहुत गोपाल' की तड़प ले कर जाए तो गुरु उसके भीतर रुहानी चेतना का एक कण प्रविष्ट कर देता है। यह कार्य नाम दीक्षा के जरिए

किया जाता है। किंतु अधिकतर लोग धन-माया मांगने जाते हैं, फलस्वरूप पार लगा देने वाली कृपा से वंचित रह जाते हैं।

रूहानी जगत में आसन

गुरु सबसे बड़ा काम यह करता है कि शिष्य को रूहानी लोक में आसन दिलाता है। रूहानी उत्कर्ष के लिए यह जरूरी है। इसका अर्थ है - शक्तिपात के माध्यम से मुरीद के ध्यान को आज्ञा चक्र पर स्थिर कर देता है। इस तरह शिष्य नीचे के पांच चक्र खोलने के परिश्रम से बच जाता है। यहीं से असल इबादत या भक्ति आरंभ होती है। गुरु का वास्तविक ऋण यही होता है कि वह रूहानियत में आसन दिलाता है। इसी ऋण को उतारने को गुरुदक्षिणा कहा जाता है। मुरीद को इसके लिए पीर के रूहानी मुकाम तक पहुंचना पड़ता है। वहां गुरु कहता है.....शाबाश! जाओ, वह सामने ही है ब्रह्म का ठिकाना; जाओ। तब कबीर का वह दोहा सार्थक होता है जिसमें कहा गया है कि 'बलिहारी गुरु आपकी, गोविंद दियो बताय'।

जब गुरु सारथी बन जाता है

रामदत्त जी गीता में कृष्ण के कथन को दोहराते हुए कहते थे कि इबादत का मज़ा तब है जब पीर तुम्हारा सारथी बन जाए। इसके लिए नाम में डूब जाओ। नाम को अपनी धड़कन बना लो। आज्ञा चक्र पर नाम की लगातार टक्कर मारते रहो। नाम को देखो, नाम को सुनो। नाम को ही आसन बना लो। नाम की ही चादर ओढ़ो। जब ऐसा करोगे तो गुरु तुम्हारा सारथी बन जाएगा। तुम्हारे लोक-परलोक का रखवाला बन जाएगा। पार लगाने वाले पुल पर तुम्हें चला देगा।

वह बेअदबी है

वे खुलेआम कहते थे कि फूल, माला, प्रसाद से परमात्मा नहीं मिलेगा। किस्मत से परमहंस पीर मिला है तो खुद को पार लगाओ। ऐसा नहीं करना बेअदबी है। ऐसे महात्मा की शरण मिलने के बाद भी अधोयोनियों में पुनर्जन्म दिलाने वाले कर्म करते रहना बेअदबी है। गुरुकृपा का मान नहीं रखना बेअदबी है। उसकी विरासत की रक्षा नहीं करना बेअदबी है। आपका नसीब अच्छा है कि

गुरु के रुप में देहधारी परमात्मा मिल गया है। फिर भी तुमने धन-दौलत मांगी तथा उसकी राह को नहीं अपनाया, यह बदनसीबी है। कच्ची रोटी खाओगे तो पचेगी नहीं। ऐसे ही नाम को पकाओगे नहीं तो पार नहीं लगाएगा। सांसारिक समृद्धि को ही परम कृपा मान लेने के क्रम में फंसे रहे।

जीवन ही उत्सव हो जाए

मज़ा तो तब है जब गुरुकृपा से तुम जीवन को उत्सव बना लो। सारा जीवन रामोत्सव, कृष्णोत्सव हो जाए। एक-एक पल नामोत्सव हो जाए। पीर साथ है तो घर में रोज ईद है। नाम खुलेगा तो उसकी ऊर्जा ऐसा कर देगी। आपका सभी शिष्यों यह उपदेश रहा है।

परिचय - श्री शिव शर्मा

राजकीय महाविद्यालय, देवली (टोंक) के हिन्दी विभाग से सेवानिवृत्त। अध्ययन, लेखन, प्रकाशन की चालीस वर्षीय यात्रा। पत्रकारिता में शताधिक लेख, फीचर्स प्रकाशित; स्तम्भ लेखन व सम्पादन क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य। जिला पत्रकार संघ (अजमेर) एवं एन.एम.एफ.आई. (ऋषिकेश) से पुरस्कृत।

प्रकाशित पुस्तकें -

1. अजमेर; इतिहास एवं पर्यटन 2. पुष्कर; अध्यात्म एवं इतिहास 3. हमारे पूज्य गुरुदेव 4. दशानन चरित 5. गुरु भक्ति की कहानियाँ 6. मोक्ष का सत्य 7. सूफी संत और उनकी कथाएँ 8. कर्मण्येवाधिकारस्ते 9. गीता पाप मोचनी 10. गीता में जीवन की पूर्णता 11. सद्गुरु शरणम् 12. नारी मुक्ति 13. अवतार का रहस्य 14. श्रीकृष्ण से मुलाकात 15. गीता - 150 प्रश्नोत्तर 16. एक श्लोक की गीता 17. संत श्री सेवाराम 18. रूहानी पुरुष 19. श्री राम चरित। 20. श्री कृष्ण जयते 21. श्री हनुमान चालीसा - विस्तृत व्याख्या (कार्य जारी)

इस पुस्तक से - नाम को अपनी धड़कन बना लो। आज्ञा चक्र पर नाम की लगातार टक्कर मारते रहो। नाम को देखो, नाम को सुनो। नाम को ही आसन बना लो। नाम की ही चादर ओढ़ो। जब ऐसा करोगे तो गुरु तुम्हारा सारथी बन जाएगा। तुम्हारे लोक-परलोक का रखवाला बन जाएगा। पार लगाने वाले पुल पर तुम्हें चला देगा।